सुविचार
हमेशा याद रखना
बेहतरीन दिनों के लिए
बुरे दिनों से लड़ना पड़ता
है !

दैनिक
बिहार पत्रिका
सच के साथ

पटना से प्रकाशित
अंक: 260
वर्ष : 06
मूल्य : 02
पृष्ठ : 06

गुरुवार, 24 अप्रैल 2025 | दैनिक हिन्दी डिजिटल अखबार | web_dainikbiharpatrika.com

पहलगाम आतंकी हमले को लेकर इंडियन एक्सप्रेस का बड़ा खुलासा!

नई दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले को लेकर इंडियन एक्सप्रेस ने बड़ी खुलासा किया है। जिसके मुताबिक, मंगलवार को पहलगाम के बैसरन घाटी के मैदानी क्षेत्र में पर्यटकों पर गोलीबारी में चार से पांच पाकिस्तानी आतंकवादी शामिल हैं।सूत्रों के अनुसार, प्रत्यक्षदर्शियों और खुफिया रिपोर्टों से पता चलता है कि हमलावरों में से कम से कम दो स्थानीय आतंकवादी हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि उनकी पहचान अभी पुख्ता तौर पर नहीं हो पाई है।

सुरक्षा एजेंसी के एक अधिकारी ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि उन्होंने (विदेशी आतंकवादियों ने) जो उर्दू बोली वह पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में बोली जाती है... कम से कम दो स्थानीय आतंकवादियों के उनके साथ होने का संदेह है, लेकिन हमें अभी तक यह नहीं पता है कि वे कश्मीर के किस हिस्से से आए थे।

अधिकारियों ने कम से कम तीन आतंकवादियों के स्केच जारी किए हैं और उनके बारे में कोई भी जानकारी देने वाले को 20-20 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। माना जा रहा है कि सभी हमलावर पीर पंजाल रेंज के ऊंचे इलाकों में भाग गए हैं और सेना, केंद्रीय

अर्धसैनिक बलों और जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा तलाशी अभियान चलाया जा रहा है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि हमलावरों के शरीर पर कैमरे लगे होने का संदेह है – जो कि आजकल एक सामान्य चलन है।अधिकारी ने कहा कि पिछले तीन सालों में जम्मू में हुए सभी हमलों को बॉडी या गन-माउंटेड कैमरों के ज़रिए शूट किया गया है। इन वीडियो का इस्तेमाल दुष्प्रचार के लिए किया जाता है। लश्कर-ए-तैयबा पहले ही फुटेज का इस्तेमाल करके दुष्प्रचार सामग्री तैयार कर चुका है।

इस बीच, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बैसरन मैदान का दौरा किया और हमले की स्थिति का जायजा लिया। वह श्रीनगर में पुलिस, खुफिया ब्यूरो और सेना के सभी शीर्ष अधिकारियों के साथ सुरक्षा समीक्षा बैठक भी कर रहे हैं। उन्होंने बुधवार को हमले के पीड़ितों से भी मुलाकात की।यह अभी भी अज्ञात है कि हमलावर कश्मीर में कैसे घुसे और वे घाटी में कितने समय से हैं। एक अधिकारी ने कहा कि इसका पता अभी भी लगाया जा रहा है। सीमा पर मौजूदा कमज़ोरियों और कुछ इनपुट के आधार पर कुछ संकेत मिले हैं, लेकिन कुछ भी पुष्टि नहीं हुई है। एजेंसियां विवरणों की पुष्टि कर रही हैं और घुसपैठ के संकेतों के लिए सीमा की जांच की जा रही है।

कश्मीरी आदिल हुसैन आतंकवादी से बंदूक छीनने की कोशिश मे मारा गया

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। बैसरन मैदान में हुए हमले में सैयद आदिल स्थानीय व्यक्ति था, जिसकी मौत हुई। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए खच्चर चालक के जनाजे की नमाज में बुधवार को हिस्सा लिया। सीएम ने मृतक सैयद आदिल हुसैन शाह के परिवार के सदस्यों से बातचीत की और उन्हें हरसंभव मदद का आश्वासन भी दिया। पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए सैयद आदिल हुसैन शाह को अंतिम श्रद्धांजलि देने के बाद मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा, "हम इसकी निंदा करते हैं और इस सदमे से पीड़ित लोगों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। हमारे मेहमान छुट्टियां मनाने के लिए बाहर से आए थे। दुर्भाग्य से, उन्हें ताबूतों में वापस घर भेज दिया गया है।आदिल ने हमले को रोकने की कोशिश कीअब्दुल्ला ने संवाददाताओं से कहा, "जैसा कि मैंने सुना है आदिल ने हमले को रोकने की कोशिश की और एक आतंकवादी से बंदूक छीनने की कोशिश की इसलिए उसे निशाना बनाया गया।" मुख्यमंत्री ने कहा, "हमें परिवार का ख्याल रखना होगा और उनकी मदद करनी होगी। मैं उन्हें यह आश्वासन देने आया हूं कि सरकार इस मुश्किल समय में उनके साथ खड़ी है और हम उनके लिए जो भी कर सकते हैं, करेंगे।" आदिल हुसैन शाह अपने परिवार में एकमात्र कमाने वाले थेसैयद आदिल हुसैन शाह अपने परिवार में एकमात्र कमाने वाले थे। उनका परिवार आदिल की मौत के लिए न्याय मांग रहा है। न्यज एजेंसी ANI से बात करते हुए आदिल के पिता ने कहा, "मेरा बेटा काम करने के लिए पहलगाम गया था और दोपहर करीब 3 बजे हमें हमले के बारे में पता चला। हमने उसे फोन किया लेकिन उसका फोन बंद था।" उन्होंने आगे बताया, "बाद में शाम 4.40 बजे उसका फोन ऑन हुआ लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। हम पुलिस स्टेशन पहुंचे और तब हमें पता चला कि वह हमले में घायल हो गया है।

रद्द हुआ सिंधु-जल समझौता, भारत में पाकिस्तानी दूतावास बंद

विदेश मंत्रालय ने आतंकी हमले के बाद लिए 5 बड़े एक्शन

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में कल हुए आतंकी हमले में 26 लोग की मौत के बाद भारत सरकार ने कड़ा एक्शन लिया है। पीएम मोदी के आवास पर हुई CCS की बैठक के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ सिंधु-जल संधि को रद्द कर दिया है। इसके साथ ही पाकिस्तान के नागरिकों को दिए जाने वाले वीजा भी रद्द कर दिए गए हैं। साथ ही भारत में पाकिस्तानी दूतावास को बंद करने और पाकिस्तानी राजनयिकों को 48 घंटे के भीतर भारत छोड़ने का निर्देश दिया गया है। पीएम आवास पर सीसीएस बैठक में गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और NSA अजित डोभाल की उपस्थिति में फैसला लिया गया कि सारे पाकिस्तानियों का वीजा रद्द किया जाएगा। गौरतलब है कि हमले में पाकिस्तान का हाथ होने के संकेत हैं। लश्कर-ए-तैयबा के संगठन TRF ने हमले की जिम्मेदारी ली है। विदेश मंत्रालय ने मीटिंग के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि अटारी-बाघा बॉर्डर चेक पोस्ट को भी बंद कर दिया गया है। पाकिस्तानियों के भारत आने पर रोक लगा दी गई है। कल रक्षा मंत्री के नेतृत्व में सर्वदलीय बैठक बुलाई गई है।

हमले भड़के ओवैसी, कहा-किसी को छोड़ना नहीं:इस आतंकवादी हमले की गंभीरता को समझते हुए,सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति ने निर्णय लिया है-

कैबिनेट समिति ने निर्णय :-

1)1960 की सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से स्थगित रखा जाएगा जब तक कि पाकिस्तान विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय रूप से सीमा पार आतंकवाद के लिए अपने समर्थन को त्याग नहीं देता।

2) एकीकृत चेकपोस्ट अटारी को तत्काल प्रभाव से बंद कर दिया जाएगा। जो लोग वैध समर्थन के साथ सीमा पार कर चुके हैं, वे 1 मई 2025 से पहले उस मार्ग से वापस आ सकते हैं।

3) पाकिस्तानी नागरिकों को SAARC वीजा छूट योजना (SVES) वीजा के तहत भारत की यात्रा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। पाकिस्तानी नागरिकों को अतीत में जारी किए गए किसी भी SVES वीजा को रद्द माना जाता है। वर्तमान में SVES वीजा के तहत भारत में मौजूद किसी भी पाकिस्तानी नागरिक के पास भारत छोड़ने के लिए 48 घंटे हैं।

4) नई दिल्ली में पाकिस्तानी उच्चायोग में रक्षा, सैन्य, नौसेना और वायु सलाहकारों को अवांछित व्यक्ति घोषित किया जाता है। उनके पास भारत छोड़ने के लिए एक सप्ताह का समय है।

5) भारत अपने वीजा वापस ले लेगा। इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायोग से रक्षा, नौसेना और वायु सेना के सलाहकार नियुक्त किए जाएंगे। संबंधित उच्चायोगों में ये पद निरस्त माने जाएंगे।

पहलगाम में आतंकी हमले के बाद बिहार पुलिस अलर्ट

पर्यटन स्थलों की सुरक्षा की गयी कड़ी

दैनिक बिहार पत्रिका । पटना

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद बिहार पुलिस अलर्ट हो गयी है और आतंकी हमले को देखते हुए बिहार के पर्यटन स्थलों की सुरक्षा कड़ी कर गई है। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद बिहार पुलिस ने तत्काल अहम बैठक की और सुरक्षा के लिए कई अहम निर्णय लिये,जिसे फॉलो कराया जा रहा है। बिहार के वनों से लेकर नालंदा खंडहर, राजगीर, पावापुरी समेत जिले के अन्य टूरिस्ट प्लेस के चप्पे- चप्पे पर नजर रखने के लिए कई उच्चस्तरीय टीमों का गठन किया गया है। राजगीर डीएसपी सुनील कुमार सिंह ने बताया कि राजगीर, नालंदा, पावापुरी समेत जिले का कोई भी पर्यटक स्थल पर आतंकी हमला का कभी इतिहास नहीं रहा है। बावजूद, उनकी संवेदनशीलता को किसी भी सूरत में हल्के में लेने की भूल नहीं

की जा सकती है। ऐसे में सभी स्थलों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। राजगीर के रोपवे, जू-सफारी, नेचर-सफारी के साथ ही वनों और पहाड़ों पर स्थित तीर्थस्थलों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। पर्यटन स्थलों पर पुलिस की गश्ती भी तेज कर दी गई है। राजगीर की पंच पहाड़ियों के साथ ही विश्व शांति स्थल, अशोक स्तूप, वेणुवन, बौद्धिस्टों का मक्का-मदीना माना जानेवाला वल्चर पीक के हर स्थल पर पैनी नजर रखी जा रही है। पुलिस ने सुरक्षा के चाक-चौबंद व्यवस्था किये हैं।

बांका: 25 हजार का ईनामी कुख्यात अपराधी गिरफ्तार

कुमार चन्दन। दैनिक बिहार पत्रिका

अमरपुर/बांका। बांका जिला के टॉप टेन में शामिल 25 हजार का ईनामी कुख्यात अपराधी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार अपराधी अमरपुर शहर के कारू मियां उर्फ करीम का पुत्र मोहम्मद तसलीम है। मामले को लेकर बांका एसडीपीओ विपिन बिहारी ने प्रेस वार्ता के दौरान बताया कि गिरफ्तार अपराधी सन् 2020-21 में पुरे प्रखंड में तांडव मचा रखा था। गिरफ्तार अपराधी के खिलाफ तीन रंगदारी, डकैती, अवैध हथियार समेत अन्य मामले को लेकर थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। अपराधी पुलिस को चकमा देकर फरार चल रहा था।

गिरफ्तार अपराधी जिला के टॉप टेन में शामिल था तथा उनपर 25 हजार का ईनाम घोषित किया गया था। मंगलवार को गुप्त सुचना मिली कि मोहम्मद तसलीम दिल्ली से अमरपुर आने वाला है। सुचना मिलते ही पुलिस अधीक्षक उपेन्द्र नाथ वर्मा के निर्देश पर एसटीएफ तथा अमरपुर पुलिस के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा अपराधी को अमरपुर-भागलपुर मुख्य मार्ग पर गिरफ्तार कर लिया गया। इसी दौरान आर्म्स एक्ट को लेकर थाने में कांड संख्या 641/24 के तहत दर्ज प्राथमिकी के फरार अभियुक्त भागलपुर जिला के सजौर थानाक्षेत्र अन्तर्गत रतनगंज रविचक गांव निवासी सितावी सिंह का पुत्र अभिषेक कुमार को गिरफ्तार किया गया। बांका एसडीपीओ ने बताया कि मु तसलीम कुख्यात अपराधी मिथुन यादव गिरोह का सक्रिय सदस्य है।

गिरफ्तार अपराधी ने पुछताछ के दौरान पुलिस को कई अहम जानकारी दिया है। अपराधियों की गिरफ्तारी से पुलिस को एक बड़ी सफलता मिली है। अपराधियों की गिरफ्तारी से काफी हद तक अपराध में लगाम लगेगी।

बांका: भाकपा माले के कार्यकर्ताओं ने धूमधाम से मनाया पार्टी का 56 वां स्थापना दिवस

कुमार चन्दन। दैनिक बिहार पत्रिका

शंभूगंज/बांका। प्रखंड अंतर्गत रामचुआ पंचायत स्थित अंबा गोयड़ा गांव में मंगलवार को भाकपा माले के कार्यकर्त्ताओं ने 56 वां स्थापना दिवस मनाया । जिसमें पार्टी के विचार धाराओं सहित अन्य विंदुओं पर चर्चा की । साथ ही लेनिन को भी याद किया । नेतृत्व कर रहे कामरेड रणवीर कुशवाहा ने बताया कि पार्टी काफी मजबूती के साथ राजनीतिक क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है। कार्यकर्त्ताओं को यह जोश और जुनून कायम रखने की जरूरत है। कामरेड ने लेनिन पर भी विस्तार पर भी चर्चा की । मौके पर पूर्व जिला परिषद रीता देवी , कामरेड रेणु देवी, अरुण दास, बीरबल राय , सहित अन्य कई कार्यकर्ता मौजूद थें ।

पहले प्रयास में सौरभ को यू पी एस सी में सफलता

माता-पिता का सपना हुआ पूरा

उमाकांत साह। दैनिक बिहार पत्रिका

चांदन/बांका। जिले के चांदन प्रखंड अंतर्गत पांडेडीह निवासी सौरभ राजेन्दू ने अपनी लगातार मेहनत से पहली बार में यूपीएससी की परीक्षा में 199 वां स्थान लाकर न सिर्फ अपने गांव पांडेडीह बल्कि चांदन प्रखंड सहित पूरे बांका जिले का नाम रौशन किया गया। सौरभ के दादा स्व लालमोहन पांडेय एक शिक्षक थे। जबकि उसके पिता राजेश कुमार पांडेय कल्याण पदाधिकारी के पद से अवकाश प्राप्त कर चुके है। इसकी माता इंदुबाला देवी है। जो अपने बेटे की सफलता पर काफी खुश है। सौरभ की प्रारंभिक शिक्षा चिन्मया विद्यालय बोकारो एंव उच्च शिक्षा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त किया था। सौरभ ने अपनी इस सफलता के लिए अपने दादा, दादी,चाचा,और माता पिता को मुख्य मार्गदर्शक बताया है। साथ ही उन्होंने कहा कि पढाई के प्रति अगर सच्ची लगन और मेहनत हो तो उसे कोई बाधा रोक नही सकती है। मेहनत करने वाला अमीर हो या गरीब उसे सफलता मिल जाती है। सौरभ की इस शानदार सफलता और प्रखंड प्रमुख रवीश कुमार, मुखिया अनिल कुमार, सरपंच राकेश कुमार वर्णवाल,विनोद पांडेय,प्रदीप पांडेय,अमरेंद्र,राजेन्द्र पांडेय,सहित हरेकृष्ण पांडेय, चंद्रमोहन पांडेय,ने बधाई दिया है।

तीन दिवसीय श्री राम महायज्ञ को लेकर 501 कलश के साथ निकाली गई भव्य कलश शोभायात्रा

कामेश्वर साह। दैनिक बिहार पत्रिका

फुल्लीडुमर/बांका। प्रखंड के भितिया पंचायत अंतर्गत अंगराजोर गांव में समाजसेवी मिथिलेश प्रसाद सिंह के द्वारा नवनिर्मित मंदिर में बजरंगबली की प्रतिमा स्थापित करने एवं तीन दिवसीय श्री राम महायज्ञ को लेकर बुधवार की सुबह लगभग 8:00 बजे 501 कलश के साथ भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गई। जानकारी के अनुसार कलश शोभा यात्रा के आगे आगे चल रहे दो दर्जन घोड़े, बैंड बाजा, डीजे एवं राम दरबार की भव्य झांकी लोगों के आकर्षण का केंद्र बना रहा। धार्मिक अनुष्ठान को लेकर विद्वान पंडितों के सहयोग से भितिया के लोहागढ़ नदी में शास्त्रोक्त विधि से 501 कलश में जल भरा गया। तत्पश्चात कलश शोभायात्रा भितिया कालीस्थान, कठडांड, अंगराजोर ठाकुर टोला,नयासी,नवाडीह आजादपुर एवं बाबूटोला अंगराजोर गांव का नगर परिभ्रमण करते हुए मंदिर प्रांगण एवं यज्ञ स्थल पर पहुंची। कलश शोभायात्रा में शामिल महिलाओं एवं भगवा झंडा लेकर शामिल सैकड़ो युवाओं की टोली द्वारा जय श्री राम के गगनभेदी नारे से सारा वातावरण भक्तिमय में हो गया।वहीं कलश शोभायात्रा के दौरान भितिया एवं अंगराजोर के श्रद्धालु भक्तजन शंभू प्रसाद साह, सुजीत सिंह,नागेंद्र ठाकुर,रूपेश कुमार ठाकुर,सत्यम कुमार एवं अन्य लोगों द्वारा जगह-जगह पर कलश शोभा यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं के लिए नींबू पानी, शरबत,जूस व फल की भी व्यवस्था की गई थी।

वहीं धार्मिक अनुष्ठान के मौके पर विधि व्यवस्था बनाए रखने को लेकर थाना अध्यक्ष बबलू कुमार के नेतृत्व में थाना के एसआई वीरेंद्र श्रीवास्तव दलबल के साथ कार्यक्रम स्थल पर मौजूद थे। वहीं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फुल्लीडुमर द्वारा एंबुलेंस को भी तैनात किया गया था। कलश शोभायात्रा को शांतिपूर्वक संपन्न कराने को लेकर धार्मिक कार्यक्रम के आयोजक मिथिलेश प्रसाद सिंह, प्रदीप सिंह, वार्ड सदस्य रणधीर सिंह, पैक्स अध्यक्ष मनोज सिंह, सिकंदर सिंह, सत्यम कुमार उर्फ गोलू,हरीश यादव, रविशंकर प्रसाद सिंह सहित दर्जनों अंगराजोर ग्राम वासियों द्वारा सक्रिय सहयोग किया जा रहा है।

नवजात की मौत पर हंगामा, डॉक्टरों पर लापरवाही का आरोप

कुमार चन्दन। दैनिक बिहार पत्रिका

रजौन/बांका। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्थित भुसिया रोड के पास एक निजी क्लीनिक में मंगलवार को तीन दिन के नवजात की मौत के बाद परिजनों ने जमकर हंगामा किया। परिजनों ने डॉक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाया। मृतक नवजात भागलपुर जिले के लोदीपुर थाना क्षेत्र के चौधरीडीह गांव निवासी पवन कुमार यादव का बेटा था। पवन ने बताया कि उसकी पत्नी पूजा देवी गर्भवती थी। वह उसे लेकर ससुराल रजौन थाना क्षेत्र के खिड्डी गांव आया था। 19 अप्रैल को पूजा को अचानक पीड़ा हुई। इसके बाद परिजन उसे रजौन भुसिया रोड स्थित अंग नर्सिंग होम ले गए। वहां डॉक्टरों ने बड़ी ऑपरेशन की बात कही। परिजनों ने सहमति दी। ऑपरेशन के बाद पूजा ने बेटे को जन्म दिया। डॉक्टरों ने बताया कि बच्चे की हालत गंभीर है। डॉ अरविंद कुमार, डॉ चंदन कुमार और डॉ कृष्ण कुमार ने बच्चे को शीशे में रखने की सलाह दी। इसके बाद बच्चे को नर्सिंग होम के पास के ही बच्चा अस्पताल में रखा गया। डॉक्टरों ने इलाज के लिए ढाई लाख रुपये मांगे। पवन ने दो लाख रुपये नकद दे दिए। 22 अप्रैल मंगलवार को जब वह बाकी 50 हजार रुपये देने गया, तब तक बच्चे की मौत हो चुकी थी। परिजनों ने जब मौत का कारण पूछा तो डॉक्टर और स्टाफ ने धमकी दी। कहा- यहां से भाग जाओ, नहीं तो गोली मार देंगे। विरोध के बाद सभी डॉक्टर और स्टाफ मौके से फरार हो गए। इसके बाद परिजनों ने नर्सिंग होम के पास हंगामा किया। हाई वोल्टेज ड्रामा चला। परिजनों ने आरोप लगाया कि डॉक्टरों की लापरवाही से बच्चे की जान गई। इस दौरान जमकर हंगामा की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। तब तक सभी डॉक्टर और स्टाफ फरार थे। पुलिस ने स्थिति को शांत कराया। इसके बाद परिजन मृत नवजात को लेकर थाने पहुंचे। वहां निजी क्लीनिक संचालक और डॉक्टरों के खिलाफ आवेदन दिया। इससे पहले दोनों पक्षों के बीच समझौते की भी कोशिश हुई थी। प्रभारी थानाध्यक्ष रवि कुमार ने बताया कि आवेदन के आधार पर जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

कश्मीर में आतंकियों की संकीर्ण मानसिकता और उनके क्रूर एजेंडे को उजागर करता- डॉ मनीष पंकज मिश्रा

दैनिक बिहार पत्रिका। गया

गया। पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों द्वारा जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर किया गया कायरतापूर्ण हमला, जिसमें धर्म पूछकर निर्दोषों की गोली मारकर हत्या की गई, अत्यंत निंदनीय और मानवता को शर्मसार करने वाला कृत्य है। इस जघन्य घटना की भाजपा बिहार किसान मोर्चा के सह प्रभारी डॉ. मनीष पंकज मिश्रा सहित कई भाजपा नेताओं ने कड़े शब्दों में निंदा की है।डॉ. मनीष पंकज मिश्रा ने इस हमले को पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का नतीजा बताते हुए कहा कि यह न केवल भारत की संप्रभुता और अखंडता पर हमला है, बल्कि कश्मीर की शांति और सद्भाव को भंग करने का भी प्रयास है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार निर्दोष पर्यटकों से धर्म पूछ कर हत्या करना, आतंकियों की संकीर्ण मानसिकता और उनके क्रूर एजेंडे को उजागर करता हैभाजपा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता ने कहा कि केंद्र सरकार और सुरक्षा बल इस हमले का करारा जवाब देंगे और दोषियों को उनके अंजाम तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत सरकार आतंकवाद के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति पर कायम है और कश्मीर घाटी में शांति कायम रखने के लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं। शहीदों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए यह भी कहा कि इस प्रकार की घटनाएं देशवासियों की एकता और दृढ़ संकल्प को और मजबूत करेंगी। इसके साथ ही उन्होंने आम जनता से भी अपील की कि वे अफवाहों से बचें और सुरक्षाबलों का सहयोग करें ताकि आतंकियों का समूल नाश किया जा सके। सभी मृतको के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए भगवान विष्णु से प्रार्थना किया उनको अपने चरणों में स्थान दें एवं घायल लोगों शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की और 2 मिनट का मोन रखकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया है ।भाजपा जिला पूर्व उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता संतोष ठाकुर डॉ विकास राय कौशल कुमार नीरज कुमार सिंह ललन कुमार मंटू कुमार बबलू गुप्ता महेश यादव राघवेंद्र दत्त अजय भट्टाचार्य धर्मेंद्र पांडे रामबालक पांडे विनोद सिंह प्रमोद सिंह नूपुर वर्मा दिया वर्मा नीलम कंडोला सहित दर्जनों की संख्या में उपस्थित होकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना व सेहत केंद्र, जी एम आर डी कॉलेज,मोहनपुर में पोषण पखवाड़ा संपन्न

रामरूप राय। दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर। जी एम आर डी महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई व सेहत केंद्र के तत्वावधान में पोषण पखवाड़ा (8 से 23अप्रैल) प्रधानाचार्य प्रो.(डॉ.) कुशेश्वर यादव के मार्गदर्शन व कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ लक्ष्मण यादव के कुशल नेतृत्व में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। उक्त कार्यकम के माध्यम से चरणबद्ध रूप से संगोष्ठी, गोद लिए गए गांव में पोस्टर द्वारा जागरूकता, नुक्कड़ नाटक, जागरुकता रैली, व्याख्यान, परिचर्चा, डोर टू डोर कैंपेन के द्वारा आम जनों को पोषण के प्रति जागरूक किए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आंगनबाड़ी सेविका,स्वास्थ्यकर्मियों, प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों इत्यादि ने सहयोग किया। महाविद्यालय सभी शिक्षकों, शिक्षकेत्तर कर्मियों, छात्र/छात्राओं, एन सी सी कैडेट्स व एन एस एसवॉलंटियर्स राहुल, काजल, आदर्श, रंजन, पिंकी, मुस्कान, विशाल, आदर्श, कृपा, नीतीश, नेहा, शिवम इत्यादि ने सभी गतिविधियों में उपस्थित रहे।

"मंडल में पहली बार लाल गाड़ी से किया गया टिकट चेकिंग

बिना टिकट यात्रियों से वसूल गया 30,60,455 रुपये जुर्माना

रामरूप राय । दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर मंडल में पहली बार विशेष टिकट चेकिंग अभियान हेतु लाल गाड़ी का उपयोग किया गया। विदित हो कि बिना टिकट/उचित प्राधिकार के यात्रा करने वाले यात्रियों को निरूत्साहित एवं टिकट लेकर यात्रा करने हेतु जागरूक करने के उद्देश्य से रेलवे प्रशासन द्वारा विशेष टिकट जाँच अभियान चलती रहती है। इस उद्देश्य से एक विशेष गाड़ी तैयार की गयी है जिसे लाल गाड़ी का नाम दिया गया है। विशेष टिकट जाँच अभियान के दौरान टिकट जाँच कर्मचारियों एवं आरपीएफ की टीम को इस विशेष गाड़ी में प्रतिनियुक्त किया गया है जो मंडल के किसी भी रेल खंड के छोटे-छोटे स्टेशनों पर जाकर उस रेल खंड से गुजरने वाले मेल एक्सप्रेस/ सवारी गाड़ियों में बिना टिकट/बिना उचित प्राधिकार के यात्रा करते पाए गये व्यक्तियों से नियमानुसार प्रभार की वसूली सुनिश्चित करते हैं। इसी क्रम में आज दिनांक 23.04.2025 को मंडल के दरभंगा – जयनगर रेल खंड के काकरघट्टी स्टेशन पर लाल गाड़ी के प्रयोग से विशेष टिकट जाँच अभियान चलाया गया। इस दौरान उस रेलखंड से गुजरने वाले मेल/एक्सपेस एवं सवारी गाड़ी में बिना टिकट/बिना उचित प्राधिकार के यात्रा करते पाए गये व्यक्तियों से निर्धारित प्रभार की वसूली की गयी। इसके परिणामस्वरूप कुल बिना टिकट/बिना उचित प्राधिकार 209 मामले प्रभारित किये गये जिनसे ₹42025/- रेल राजस्व के रूप में अर्जित हुये । इसी क्रम में दिनांक 22.04.2025 को मंडल के विभिन्न रेल खंडों में किला बंदी अभियान चलाया गया था जिस दौरान 3889 मामले प्रभारित किये गए जिनसे 30,18,430/-(तीस लाख अठारह हजार चार सौ तीस) रेल राजस्व के रूप में अर्जित हुए। मंडल में आगे भी इस प्रकार के विशेष अभियान चलाये जायेंगे।

पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर अभाविप कार्यकर्ताओं ने निकाला प्रतिरोध मार्च

रामरूप राय । दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर । अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद समस्तीपुर नगर इकाई द्वारा जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में आक्रोश मार्च निकाला गया। कार्यक्रम का नेतृत्व नगर मंत्री शुभम कुमार ने किया। इस अवसर पर परिषद् कार्यकर्ताओं का जत्था परिषद कार्यालय से निकलकर पूरे शहर में आक्रोश मार्च निकाला। इस दौरान कार्यकर्ताओं के हाथ में आतंकवाद मुर्दाबाद, जाति नहीं धर्म पूछकर मारा जैसे नारे की तख्तियां थी। इस अवसर पर विद्यार्थी परिषद् के प्रदेश सह मंत्री श्री अनुपम कुमार झा ने कहा कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुआ नृशंस आतंकी हमला अत्यंत निंदनीय एवं संतापजनक है। अभाविप घटना में मृत हुए सभी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं। तथा घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं। यह हमला देश की एकता व अखंडता पर प्रहार करने का दुःसाहस है। अभाविप इस आक्रोश मार्च के माध्यम से केंद्र सरकार से मांग करती हैं। कि जम्मू कश्मीर में बढ़ रहे आतंकी घटनाओं के समूल विनाश के लिए इसकी जननी श्रोत के ऊपर कठोर कार्रवाई करें आज पूरा विश्व इस्लामी आतंकवाद से त्रस्त हैं। दुनिया की सबसे बड़ी हिन्दू आबादी वाला देश भारत आतंकवादी घटनाओं का लगातार शिकार होता जा रहा है। मौके पर नगर अध्यक्ष चंदन मिश्रा शुभम कुमार किशन कुमार गोविंद कुमार

प्रियांशु कुमार प्रिंस कुमार अंकित राज अभिषेक कुमार सूरज कुमार रोहित कुमार जिला सहसंयोजक केशव माधव प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सिंटू पांडे रोशन आनंद कमलेश कुमार विनीत कुमार अमित झा संजय कुमार यादव

शुभम कुमार अमित कुमार विशाल कुमार राकेश रोशन झा सुजीत मिश्रा निक्कू आर्य बादल सिंह गुंजन मिश्रा संतोष कुमार सिंह निखिल झा ऋषिकेश गौतम मनीष चौधरी नीरज झा मौजूद थे।

जदिया में एक युवक से मोबाइल और बाइक लुट, जांच में जुटी पुलिस

दैनिक बिहार पत्रिका । सुपौल

जिले के जदिया थाना क्षेत्र के दतुवा थलही पुल के समीप मोटरसाइकिल सवार तीन अपराधियों के द्वारा मधेपुरा जिला के भथनी कुपारी निवासी सूरज कुमार के उपर पहले बंदूक के कुंदा से सर पर प्रहार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया. तत्पश्चात उसका मोबाइल तथा मोटरसाइकिल लूट लिया गया. इस दौरान अपराधियों के द्वारा धमकाने के उद्देश्य से फायरिंग भी किए जाने की बात बताई गई है। जानकारी अनुसार जानकारी सूरज कुमार किसी कार्य से दतुवा आए हुए थे। अपना कार्य पूरा करने के बाद घर वापस लौटने के क्रम में दतुवा थलही पूल के समीप मोटरसाइकिल सवार तीन अपराधियों के द्वारा मोटरसाइकिल रुकवाकर पहले मोटरसाइकिल की चाभी छीन लिया गया.विरोध करने पर अपराधियों के द्वारा सूरज के सर पर बंदूक के कुंदा से वार कर गंभीर रूप से घायल कर दिए जाने के बाद मोबाइल और उनका बाइक लूट लिया गया। जबकि एक राउंड फायरिंग करने के बाद तीनों अपराधी घटना स्थल से भाग निकले. सूरज कुमार का कहना है कि सभी अपराधियों का उम्र करीब 22 से 24 वर्ष के करीब होगी। धटना की सुचना मिलते ही जदिया पुलिस घटनास्थल पर पहुंचे और मामले की जांच में जुट गई हैं, इस बाबत जदिया थाना प्रभारी राजीव कुमार ने कहा कि घटना को लेकर पुलिस जांच शुरू कर दिए हैं बहुत जल्द अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया जायेगा।

जन सुराज पार्टी के युवा प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ बीडी शर्मा ने पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की

दैनिक बिहार पत्रिका । गया

जन सुराज पार्टी के युवा प्रदेश उपाध्यक्ष, टिकारी विधानसभा क्षेत्र के संभावित उम्मीदवार, युवा समाजसेवी डॉ बीडी शर्मा ने जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकी संगठन लश्कर-ए- तैयवा द्वारा पर्यटकों की गोली मारकर नृशंस हत्या किए जाने घटना की तीव्र निंदा करते हुए कहा कि पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले बेहद दर्दनाक है।यह एक अक्षम्य अपराध है। भारत सरकार किसी भी सूरत में इन आतंकवादियों को मार गिराने का काम करें ताकि उनके बुलंद हौसले कभी भी भारत की ओर मुंह कर नहीं देखें। उन्होंने कहा कि यह घटना हृदय विदारक घटना है। आतंकी हमले से कश्मीर के पर्यटन व्यवसाय को काफी नुकसान पहुंचा है। पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकी धर्म पूछकर पर्यटकों को मार गिराना जैसा घृणित कार्यकर मानवता को कलंकित करने का काम किया है। भारत सरकार की खुफियां एजेंसियों के लापरवाही से आतंकी हमले हुए हैं। उन्होंने भारत के आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करते हुए कहाकी रक्षा मंत्रालय की खुफिया एजेंसियां क्यों नहीं आतंकी हमले के पहले अलर्ट मोड में रही। कहीं ना कहीं भारत का सूचना तंत्र कमजोर है तभी तो आतंकी हमारे देश में घुसकर पर्यटकों पर हमला किया है। भारत की सरकार देश के आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करें नहीं तो आतंकी हमले होते रहेंगे। इस हमले में मारे गए लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं एवं घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।

रोमांस, रॉयल्टी और बिंदास-अंदाज़ दिखेंगे नेटफ़्लिक्स की आने वाली सीरीज़ 'द रॉयल्स'

दैनिक बिहार पत्रिका। मुंबई

एक ढहते हुए राजघराने और एक तेज़, आत्मनिर्भर सीईओ के बीच शुरू हुआ एक बिजनेस डील जो जल्द ही एक रोमांस, कॉमेडी और बहुत सारे ड्रामा के रोलरकोस्टर में बदल जाता है!

नेटफ़्लिक्स की 'द रॉयल्स' का ट्रेलर आ चुका है — जिसमें पहली झलक मिलती है भव्य लेकिन ढलते शहर मोरपुर की..जहाँ एक प्यारा सा राजकुमार और एक ज़िद्दी सीईओ मजबूरन साथ आते हैं.. और शायद एक-दूसरे से प्यार भी कर बैठते हैं। इस सीरीज़ में ईशान खट्टर निभा रहे हैं अविराज सिंह का किरदार — एक ना चाहते हुए भी बनाया गया हुआ, पोलो खेलने वाला नए ज़माने का राजकुमार, और भूमि पेडनेकर बनी हैं आम कुमारी सोफिया कनमनी शेखर — एक तेज़तर्रार सीईओ जिसके सपने किसी महल से भी बड़े हैं। जब ये दोनों मिलकर मोरपुर की मुश्किल में फंसी हवेली और उसके अजीबो-गरीब निवासियों को एक लग्ज़री बी & बी होटल में बदलने की कोशिश करते हैं, तो उनके इगो और एम्बिशन्स की टक्कर होती हैं और बनती हैं एक तूफानी कहानी — जिसमें है फ्लर्ट, फैमिली ड्रामे और हाई स्टेक्स क्रेज़ीपन।

हालाँकि ट्रेलर लॉन्च पर मौजूद नहीं रह पाईं, लेकिन ज़ीनत अमान ने अपने दशकों लंबे शानदार करियर पर बात करते हुए कहा, "मैं आज भी नए रोल्स और अवसरों को अपनाने को लेकर उतनी ही पैशनेट हूँ जितनी पहले थी। द रॉयल्स का अनुभव रिफ्रेशिंग और क्रिएटिविटी से भरपूर था। जोश और नई सोच वाले युवा टैलेंट्स के साथ काम करना हर सीन को मज़ेदार बना गया। मैं प्रीतिश नंदी कम्यूनिकेशन्स और नेटफ़्लिक्स का दिल से आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस अनोखी रोमांस की कहानी का हिस्सा बनाया।"

भूमि पेडनेकर कहती हैं, "सोफिया का किरदार निभाना ऐसा लगा जैसे मैं एक ऐसी दुनिया में कदम रख रही हूँ जो एक ओर तो प्रेरणादायक है और दूसरी ओर बिलकुल ही अपने जैसी लगती है। वो ज़िद्दी है, एम्बिशियस है और इमोशनली ऑनेस्ट है — ये सब क्वालिटीज मुझे हमेशा आकर्षित करती हैं। नेटफ़्लिक्स और प्रीतिश नंदी कम्यूनिकेशन्स के साथ द रॉयल्स सीरीज़ में काम करके मैं ख़ुद को बेहद खुशनसीब समझती हूँ — हमें इसे बनाते हुए जितना मज़ा आया, उम्मीद है दर्शकों को इसे देखने में भी उतना ही मज़ा आएगा।"ईशान खट्टर ने कहाँ, "इतने लेजेंडरी और अनुभवी कलाकारों के साथ स्क्रीन शेयर करना इंस्पायरिंग भी था और बेहद मज़ेदार भी। ये नेटफ़्लिक्स के साथ मेरी दूसरी ग्लोबल और पहली नेटफ़्लिक्स इंडिया की कोलैबोरेशन है। ये सफर फिर से रोमांचक रहा। द रॉयल्स एक फ्रेश, मॉडर्न रोम-कॉम है — अजीब, अनप्रेडिक्टेबल और सरप्राइज़ से भरा हुआ। मैं दर्शकों को मोरपुर की इस दुनिया का सफ़र करते हुए देखने के लिए बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूँ! इसमें है ढेर सारा प्यार,ड्रामा एंड ह्यूमर —समथिंग फॉर एवरीवन। महाराज अविराज अब तक का सबसे फ्रस्ट्रेटिंग लेकिन चार्मिंग किरदार रहा है और उम्मीद है कि लोगों को उसे देखना उतना ही पसंद आएगा जितना मुझे उसे निभाते हुए आया।"

1857 क्रांति के महानायक बाबू वीरकुंवर सिंह का विजय उत्सव मनाया गया

दैनिक बिहार पत्रिका । खगड़िया

जिले के परबत्ता प्रखंड के सौढ उत्तरी पंचायत के बुद्धनगर भरतखण्ड गांव के रविदास बैठका में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 के खलनायक बाबू वीरकुंवर सिंह का विजय उत्सव शौर्य दिवस पर श्रद्धापूर्वक याद किया गया। कार्यक्रम का मुख्य अतिथि शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने शुभारंभ किया। शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि बाबू वीरकुंवर सिंह भोजपुर जिले के शाही उज्जैनिया राजपूत परिवार में जन्म हुआ था। बिहार में 1857 क्रांति का विद्रोह बाबू वीरकुंवर सिंह ने किया था। बाबू वीरकुंवर सिंह की पहचान केवल एक योद्धा के तौर पर नहीं है। फिरंगी के विरुद्ध लगातार युद्ध होने के कारण आर्थिक तंगी के बावजूद उन्होंने स्कूल बनवाने के लिए जमीन दान में दीं। हिन्दू मुस्लिम एकता की मजबूती के लिए बाबू वीरकुंवर सिंह ने आरा और जगदीशपुर में मस्जिद का निर्माण कराया। शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने बताया कि 80 साल के उम्र में बाबू वीरकुंवर सिंह के दहाड़ से अंग्रेजों के पसीने छूट जाते थे। उन्होंने बिहार में ईस्ट इंडिया कंपनी को बहुत क्षति पहुंचाया। शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने बताया कि बाबू वीरकुंवर सिंह के बारे में अंग्रेजों ने कहा था कि अच्छा है कि यह योद्धा 80 साल का है, युवा होता तो अभी भारत छोड़ना पड़ता। शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने बताया कि अस्सी सालों की हड्डी में जागा जोश पुराना था, सब कहते हैं बाबू कुंवर सिंह वीर मर्दाना था। बाबू वीरकुंवर सिंह ने सात बार अंग्रेजों को युद्ध में हराकर धूल चटा दी। बाबू वीरकुंवर सिंह 1857 में दानापुर से गदर का नेतृत्व कर उन्होंने आजमगढ़ तक कब्जा कर लिया।80 साल की उम्र में उन्होंने लगभग 81 दिन तक आजमगढ़ को आजाद रखा। शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने बताया कि 23 अप्रैल 1858 को जगदीशपुर के पास लड़ी गई अंतिम लड़ाई में, बाबू वीरकुंवर सिंह ने ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों को पूरी तरह से खदेड़ दिया था। उन्होंने जगदीशपुर किले से यूनियन जैक नाम का झंडा को उतारकर ही दम लिया। गंगा नदी पार करने के दौरान अंग्रेजों की गोली से घायल हो गए। गोली का जहर शरीर में फैल ना जाए उन्होंने अपने तलवार से अपनी भुजा को काटकर गंगा मां को प्रवाहित कर दी। और तीन दिन बाद बाबू वीरकुंवर सिंह सदा के लिए चिर निंद्रा में सो गए। मौके पर शिक्षक सिद्धार्थ कुमार, उत्कर्ष कुमार, सार्थक कुमार, मनोरंजन कुमार, सत्यम, रोहन, प्रिंस, मयंक, आदर्श, प्रेम, और सैकड़ों ग्रामीण मौजूद थे।

सरकार में आने के बाद मुख्यमंत्री ने दलित समाज के लिए काम करना शुरू किया है - राजू वर्णवाल

दैनिक बिहार पत्रिका । गया

गया स्थित डेल्हा धनिया बगीचा में आयोजित भीम संवाद सह भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री सह गया के लोकप्रिय सांसद जीतनराम मांझी जी का हजारों संख्या में मौजूद स्थानीय लोगों की मौजूदगी में नागरिक अभिनन्दन समारोह आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम के आयोजक जिलाध्यक्ष महानगर जदयू गया राजकुमार प्रसाद उर्फ राजु वर्णवाल एवं हम सेकुलर महानगर गया अध्यक्ष मुकेश चौधरी ने संयुक्त रूप से किया है।

सभा को संबोधित करते हुए माननीय केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी ने भारत के युवाओं की ताकत पर जोर दिया और उनसे नए भारत के निर्माण के लिए डॉ अंबेडकर की विरासत के पथ प्रदर्शक बनने का आह्वान किया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वे विकसित भारत की ओर भारत की यात्रा में बाबा साहेब अंबेडकर और अन्य महान नेताओं की दूरदर्शिता, विरासत और अनुकरणीय कार्यों से प्रेरणा लें। उन्होंने 1947 की शुरुआत में महिलाओं के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करने में बाबा साहेब अंबेडकर के अग्रणी योगदान पर प्रकाश डाला, वह समय जब दुनिया के कई हिस्सों में लैंगिक समानता को मान्यता नहीं दी गई थी। राजू बरनवाल ने भी कहा कि जातीय गणना के बाद लगभग 20% की आबादी को हमारे लोकप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बनाने का काम किया है. उसके लिए आरक्षण के प्रावधानों को बढ़ाया है. हम सब लोग नीतीश कुमार के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।जो नीतीश कुमार से प्यार करते हैं, जो विश्वास करते हैं. अंबेडकरवादी विचारधारा के लोग हैं,जो मानते हैं कि नीतीश कुमार ने अपने पूरे कार्यकाल में अंबेडकर के विचारों को अपने शासन का मूल स्वरूप बनाया वह सभी लोग आए हैं।सरकार में आने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दलित समाज के लिए काम करना शुरू किया है। बाबा साहेब ने संविधान की रचना की। यह छोटी बात नहीं है। उनके प्रति पूरे देश में बड़ी आस्था है। हमारी सरकार ने बाबा साहेब के सपनों को साकार करने के लिए बहुत सारे काम किए हैं। महिलाओं और सभी जाति के लोगों के लिए काम हुआ चाहे दलित हों, महादलित हों, पिछड़ा वर्ग हो या अपर कास्ट हो। सबकी भलाई के लिए काम किया है। जो कमी थी उसे पूरा किया है। आगे भी हमलोग समाज के सभी तबकों को एक साथ लाकर सबके लिए काम करते रहेंगे। मुस्लिम समुदाए के लिए भी काफी काम किया है। इस कार्यक्रम मुख्य रूप से उपस्थित जदयू के प्रभारी अरमान उर्फ गुड्डू जी,जदयु नेता इकबाल हुसैन,हम नेता रोमित कुमार,नारायण मांझी,टुटु खाँ ,कमांडर,रमेश सिंह ,प्रो. अनिल, अशोक चौधरी विकास सहित हजारों की संख्या में मौजूद जनता जनार्दनों की मौजूदगी रही है।

विधायक और मुखिया ने संयुक्त रूप से रखा पंचायत सरकार भवन का आधारशिला

दैनिक बिहार पत्रिका । समस्तीपुर

मोहिउद्दीन नगर प्रखंड अंतर्गत मदुदाबाद पंचायत मे योजना एवं विकास विभाग से तीन करोड़ बारह लाख की लागत से बननेवाले पंचायत सरकार भवन का आधारशीला स्थानीय विधायक राजेश कुमार सिंह एवं मुखिया अनिता देवी ने सयुंक्त रूप से रखा। आधारशिला रखने उपरांत विधायक राजेश कुमार सिंह ने कहा कि बिहार की एनडीए सरकार का सोच और सपना है कि इस भवन के बनने से पंचायत स्तर से सभी कर्मी पंचायत सरकार भवन मे ही बैठेंगे और लोगों का काम होगा और प्रखंड के चक्कर लगाने से छुटकारा मिलेगा। इस आधारशीला कार्यक्रम मे मंडल अध्यक्ष रितेश चौधरी,प्रखंड अध्यक्ष जदयू अमित सिंह गुल्लू,प्रखंड अध्यक्ष लोजपा सुरेंद्र पासवान,पूर्व प्रमुख कृष्णा चौधरी,जदयू नेता धर्मेंद्र साह,अंजनी सिंह,सुधीर चौधरी,पंकज सिंह,रंजीत राय उर्फ़ तमौली, अमरनाथ राय,नवनीत झा,अविनाश झा,धरम सिंह,संतोष राय,बिकेश राय,अमरनाथ राय,शंकर जायसवाल,मो. सागीर,अरुण सहनी,रंजीत सहनी,लोहा सिंह,संजीत यादव आदि उपस्थित थे।

नजूल भूमि पर गरीबों के लिए फ्लैट बनाएगी योगी सरकार

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ के ऐशबाग इलाके में अब नजूल भूमि पर प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत फ्लैट बनाए जाएंगे। लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) के उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने मौके पर पहुंचकर योजना का जायजा लेकर जरूरी कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने जमीन का सर्वे करने और नियोजन के लिए पांच सदस्यीय समिति बनाई है, जो एक हफ्ते में रिपोर्ट सौंप देगी। निरीक्षण के दौरान सामने आया कि वहां कुछ परिवार झोपड़ियां और टिनशेड में रह रहे हैं और कई जगहों पर अवैध दुकानें भी चल रही हैं। उपाध्यक्ष ने अधिकारियों को अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई जल्द शुरू करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने चारबाग स्टेशन के पास बने फुटओवर ब्रिज का भी निरीक्षण कर यात्रियों की सुविधा के लिए एस्केलेटर सीढ़ियां बनाने का प्रस्ताव दिया। इसके लिए स्ट्रक्चर डिजाइन और लोड टेस्टिंग जल्दी पूरी करने का आदेश दिया। इस दौरान कुमार ने सुदर्शनपुरी में बन रहे कम्युनिटी सेंटर का भी निरीक्षण हुआ, जहां काम की गति संतोषजनक मिली। उपाध्यक्ष ने कहा कि इसके संचालन और रखरखाव के लिए जल्दी ही टेंडर निकाला जाए। इसके अलावा, नंदाखेड़ा के तुलसी कॉम्प्लेक्स का भी निरीक्षण किया गया, जहां अब पुराने आवंटियों को प्रधानमंत्री आवास में शिफ्ट कर पूरी कॉलोनी का री-डेवलपमेंट किया जाएगा। अतिक्रमण हटाकर इस प्रक्रिया को इसी सप्ताह शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं। उपाध्यक्ष ने ऐशबाग में जमुना झील के पास बने अटल पार्क का भी निरीक्षण किया और वहां सुरक्षाकर्मियों की तैनाती, टिकट व्यवस्था शुरू करने और पार्क को जनता के लिए खोलने के निर्देश दिए।

बोकारो में मारे गए आठ नक्सलियों के शव लेने नहीं पहुंचे उनके परिजन

बोकारो (एजेंसी)। झारखंड के बोकारो के लुगु पहाड़ में पुलिस मुठभेड़ के दौरान मारे गए आठ नक्सलियों का पोस्टमार्टम हुआ। लेकिन, मारे गए नक्सलियों के परिजन या उनके समर्थक अबतक सामने नहीं आए हैं। आठ में से मारे गए एरिया कमांडर अरविंद यादव के शव को लेने भाई अजज बोकारो पहुंचे, जिन्हें पुलिस ने शव जमुई ले जाने के लिए सौंप दिया गया है। इन सात नक्सलियों में विवेक एक करोड़ का इनामी माओवादी है और सेंट्रल कमेटी सदस्य है। लेकिन मुठभेड़ में मौत के बाद उसके शव पर दावा करने वाला अबतक सामने नहीं आया। बोकारो पुलिस की टीम मानवता का परिचय देकर गिरिडीह रवाना हुई। क्योंकि मारे गए आठ में से छह नक्सली गिरिडीह के मूल निवासी हैं। फोटो दिखाकर पहचान के बाद परिजनों को शव का अंतिम संस्कार के लिए प्रोत्साहित करने में जुटे हैं। शवों के पोस्टमार्टम के बाद सभी मृत आठ नक्सलियों का बेसरा जांच के लिए सुरक्षित रखा गया है। वहीं, डीएनए जांच के लिए मृत शरीर से सैंपल संग्रहित कर सुरक्षित रखे गए हैं। इसके अलावा उनके शरीर से निकले दो बुलेट भी सुरक्षित रखे गए हैं। पोस्टमार्टम होने तक किसी भी मृत नक्सली के शव को हासिल करने के लिए कोई दावा पेश नहीं किया। उनके कोई भी संबंधी शव लेने के लिए पोस्टमार्टम हाउस नहीं पहुंचे।

दिल्ली दंगे को लेकर कोर्ट ने 57 आरोपियों पर किए गंभीर आरोप तय

-कोर्ट ने कहा-आरोपियों की हरकतें हिंसा फैलाने और कानून को ठेंगा दिखाने की थीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर-पूर्वी दिल्ली में साल 2020 में हुए दंगे को लेकर कड़कड़डूमा कोर्ट ने फैसला सुनाया है। कोर्ट ने चांद बाग और मुख्य वजीराबाद रोड इलाके में हुई हिंसा से जुड़े मामले में 57 आरोपियों के खिलाफ दंगा, आगजनी, तोड़फोड़ और हमला करने जैसे गंभीर आरोप तय किए हैं। कोर्ट ने साफ कहा कि यह कोई आकस्मिक भीड़ नहीं थी, बल्कि एक उद्देश्य के साथ एकत्र हुई हिंसक थी, जो तबाही मचाने निकली थी। जज पुलस्त्य प्रमाचला ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। कोर्ट के मुताबिक दर्जनों गवाहों ने यह पुष्टि की है कि आरोपी घटनास्थल पर मौजूद थे। गवाहों ने कोर्ट को बताया कि दंगाई भीड़ ने एक ट्रक, टू-व्हीलर और गोदाम को आग के हवाले कर दिया था। साथ ही आम नागरिक को रोककर उसके साथ मारपीट की। कोर्ट का कहना है कि आरोपियों की हरकतें हिंसा फैलाने और कानून व्यवस्था को ठेंगा दिखाने की थीं। कोर्ट ने आरोपियों पर से आपराधिक साजिश की धारा के आरोप से राहत दी, लेकिन यह जरूर माना कि भीड़ की नीयत साफ तौर पर हिंसा फैलाने की थी।

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में लगे भूकंप के हल्के झटके, कोई नुकसान नहीं

जम्मू, (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में बुधवार दोपहर भूकंप के हल्के झटके लगे। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक यह झटका दोपहर 2 बजकर 10 मिनट और 44 सेकंड पर दर्ज किया गया। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 3.6 मापी गई, जबकि इसकी गहराई 10 किलोमीटर थी। भूकंप की तीव्रता कम होने के कारण जान-माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। लोग घबराकर अपने घरों और कार्यालयों से बाहर आ गए थे, लेकिन स्थिति जल्द ही सामान्य हो गई। प्रशासन ने बताया कि एहतियात के तौर पर निगरानी की जा रही है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह झटका भूगर्भीय हलचल का सामान्य परिणाम हो सकता है।

ठाणे में 12 वर्षीय बच्चे की हत्या का मामला, 2 आरोपियों को हाईकोर्ट ने दी जमानत

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाई कोर्ट ने ठाणे के दो लोगों को जमानत दे दी है, जिन पर अपने दोस्त की मदद करके 12 साल के एक लड़के का अपहरण करने और उसकी हत्या करने का आरोप था, जो उसे 'नपुंसक' कहता था। हाल ही में हुई सुनवाई के दौरान, अदालत ने फैसला सुनाया कि अभियोजन पक्ष अपराध में दो आरोपियों की प्रत्यक्ष संलिप्तता को साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत पेश करने में विफल रहा है।

कहां हुई चूक: हमले के इनपुट होने के बाद भी हो गया नरसंहार?

जम्मू (एजेंसी)। पहलगाम हमले को लेकर सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि खुफिया एजेंसियों को इस तरह के हमले की संभावना के बारे में पहले से इनपुट मिले थे। अप्रैल 2025 की शुरुआत में ही खुफिया सूत्रों ने चेतावनी दी थी कि आतंकी संगठन पहलगाम जैसे पर्यटक स्थलों को निशाना बनाने की योजना बना रहे हैं। इनपुट्स में यह भी कहा गया था कि आतंकियों ने रेकी कर ली है और वे किसी बड़े हमले की फिराक में हैं। खुफिया जानकारी के अनुसार, हमास, जैश और लश्कर के बीच तालमेल बढ़ रहा था, और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आईएसआई की देखरेख में आतंकियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

10 मार्च को केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन ने जम्मू में एक उच्च स्तरीय सुरक्षा समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। एक महीने से भी कम समय बाद, 6 अप्रैल को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने श्रीनगर में इंटीग्रेटेड कमान की बैठक की अध्यक्षता की। जम्मू-कश्मीर के दो क्षेत्रों में लगातार बैठकें खुफिया एजेंसियों की चेतावनी के बीच हुईं कि पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में भीषण गर्मी की तैयारी कर रहा है। मंगलवार को, जब पहलगाम में पर्यटकों की चीखें गूंजने लगीं, तो एजेंसियों की सबसे बड़ी आशंका सच साबित हुई।

रिपोर्ट के मुताबिक, लगभग छह आतंकवादियों ने, कुछ स्थानीय सहायकों की मदद से, इस हमले को अंजाम दिया। सूत्रों ने बताया कि ये आतंकी हमले से कुछ दिन पहले इलाके में आ चुके थे, रेकी की थी, और मौके की तलाश में थे। अप्रैल की शुरुआत (1-7 तारीख के बीच) में कुछ होटलों की रेकी किए जाने की खुफिया सूचना पहले से ही मौजूद थी। हालांकि एक वरिष्ठ सूत्र ने कहा, यह कहना गलत होगा कि खुफिया एजेंसियों से चूक हुई। इनपुट्स थे, लेकिन हमलावर मौके की तलाश में थे और उन्होंने सही समय देखकर वार किया। इस हमले में कुछ विदेशी, खासतौर पर पाकिस्तानी आतंकवादी भी शामिल बताए जा रहे हैं। माना जा रहा है कि इन आतंकियों ने कुछ दिन पहले ही घाटी में घुसपैठ की थी और हमले से पहले इलाके की रेकी की थी। केंद्रीय बलों द्वारा रखे गए आंकड़ों के अनुसार, जम्मू-कश्मीर में 70 विदेशी आतंकवादी सक्रिय हैं। डीजीपी नलिन प्रभात द्वारा मार्च में हीरानगर में एक ऑपरेशन का नेतृत्व करने के बाद अंतरराष्ट्रीय सीमा पर हाल ही में घुसपैठ की कोशिशों को विफल कर दिया गया था।

लेकिन एजेंसियों को संदेह है कि कई विदेशी आतंकवादी अपने आकाओं से सही आदेश पाने के लिए घुसपैठ के बाद छिपे हुए हो सकते हैं। बर्फ पिघलने के साथ, पहाड़ी रास्ते खुल गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पहलगाम में आतंकवादी पर्यटकों पर हमला करने के लिए बैसारन के मैदानों तक पहुंचने के लिए पहाड़ियों से नीचे उतरे। आतंकवादियों को भागने से रोकने

के लिए घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया है। एनआईए की टीम मौके पर जाने के लिए तैयार है। एनआईए उन ओवरग्राउंड वर्करों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर सकती है, जिन्होंने संभवतः विदेशी आतंकवादियों की मदद की थी।

माता के श्रद्धालुओं में आई कमी, घोड़े-पिट्ठू, पालकी वालों और कारोबारियों में निराशा

कटड़ा। जम्मू-कश्मीर में पल-पल मौसम बदल रहा है। कटड़ा में एकाएक तेज हवा के साथ वर्षा और ओलावृष्टि शुरू हो गई। मां वैष्णो देवी मार्ग पर ओले गिरने से हल्की सफेद चादर बिछ गई। करीब एक घंटा तक ओले गिरते रहे, जिससे मां वैष्णो देवी के मार्ग, भवन परिसर और कटड़ा में जैसे हल्की सफेद चादर बिछ गई हो। इससे ठंड का अहसास भी होने लगा। मौसम के इस मिजाज के कारण दर्शन को जाने वाले श्रद्धालुओं को दिक्कत हुई। मौसम के तेवर को देखकर भवन मार्गों पर आपदा प्रबंधन दल के साथ श्राइन बोर्ड प्रशासन, पुलिस विभाग, सीआरपीएफ के अधिकारी व जवान जगह-जगह तैनात हैं। फिलहाल मां वैष्णो देवी के सभी मार्ग पूरी तरह से सुचारु है, लेकिन कटड़ा-सांझीछत के बीच चलने वाली हेलीकाप्टर सेवा दिन में अधिकांश समय बाधित ही रही। बैटरी कार और केबल कार सेवा बहाल रही। करीब 20,800 श्रद्धालु भवन की ओर रवाना हो चुके थे। श्रद्धालुओं का आना जारी था। इससे पूर्व रविवार को 30,072 श्रद्धालुओं ने माता दरबार में हाजिरी लगाई थी।

व्यापारी वर्ग में निराशा- हालांकि, छुट्टियों के खत्म होने के बाद से और मौसम में आए बदलाव की वजह से माता के दरबार में श्रद्धालुओं की कमी देखने को मिल रही है। श्रद्धालुओं में आई कमी की वजह से घोड़े-पिट्ठू, पालकी वालों के साथ-साथ व्यापारी वर्ग में निराशा देखने को मिल रही है।

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम शिंदे श्रीनगर रवाना, जम्मू-कश्मीर में फंसे पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की सुरक्षा और कल्याण के लिए उठाया कदम

जम्मू (एजेंसी)। पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे आज शाम श्रीनगर पहुंचेंगे। इस हमले में 26 नागरिक मारे गए थे और कई घायल हुए थे। एकनाथ शिंदे शाम 7-30 बजे मुंबई से श्रीनगर के लिए रवाना होंगे। प्रवक्ता ने कहा कि उनकी यात्रा जम्मू-कश्मीर में सभी पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की सुरक्षा और कल्याण के लिए महाराष्ट्र सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। मंगलवार दोपहर पहलगाम के बैसरन इलाके में आतंकवादियों द्वारा पर्यटकों के एक समूह पर हमला किए जाने के बाद महाराष्ट्र के छह लोगों सहित 26 नागरिक मारे गए। माना जा रहा है कि आतंकवादियों की संख्या चार थी। महाराष्ट्र के छह पर्यटकों में से चार के शवों को मुंबई और दो के शवों को पुणे ले जाए जाने की उम्मीद है। जम्मू-कश्मीर के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के कार्यालय से जारी बयान के अनुसार, मंगलवार को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में महाराष्ट्र के पांच पर्यटक मारे गए। इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई, जिनमें से अधिकतर पर्यटक थे और कम से कम 12 अन्य घायल हो गए। आतंकवादियों ने मंगलवार दोपहर कश्मीर के पहलगाम शहर के निकट एक लोकप्रिय मैदान पर गोलीबारी की। एकनाथ शिंदे ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू से महाराष्ट्र में फंसे पर्यटकों को निकालने के लिए विशेष उड़ान की व्यवस्था करने का आग्रह किया है। नायडू ने शिंदे को आश्वासन दिया कि फंसे हुए लोगों की सूची उपलब्ध होने के बाद, उन्हें मुंबई पहुंचाने को प्राथमिकता देने का प्रयास किया जाएगा।

बयान में कहा गया है कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए हमले में महाराष्ट्र के पांच पर्यटकों की जान चली गई। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उन्हें राज्य में वापस लाने की व्यवस्था के संबंध में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू से फोन पर बातचीत की। बातचीत के दौरान शिंदे ने नायडू से जम्मू-कश्मीर में फंसे महाराष्ट्र के पर्यटकों को वापस लाने के लिए विशेष उड़ान की व्यवस्था करने का अनुरोध किया।

अखिलेश का आरोप पहलगाम हमले में भी भाजपा आपदा में अवसर ढूंढ रही

भाजपा का पलटवार, सपा हमेशा तुष्टीकरण की राजनीति करती

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने भाजपा पर पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद आपदा में अवसर ढूंढने का आरोप लगाकर कहा कि पार्टी अपनी सत्ता के सिवा और किसी की सगी नहीं है। अखिलेश ने पोस्ट में भाजपा पर पहलगाम आतंकवादी हमले को लेकर बचकाना विज्ञापन जारी करने का आरोप लगाया। इस पर भाजपा ने पलटवार कर सपा पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाया है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा ने पहलगाम के बेहद दर्दनाक हादसे पर बचकाना विज्ञापन जारी कर साबित किया है कि भाजपा की संवेदना उन लोगों के प्रति शून्य है, जिन्होंने अपना जीवन खोया है और जिनके परिजनों पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। भाजपा अपनी सत्ता के सिवा किसी की सगी नहीं है। घोर निंदनीय!

सपा प्रमुख ने हालांकि पोस्ट के साथ कोई विज्ञापन टैग नहीं किया है लेकिन पार्टी नेताओं का मानना है कि उनका इशारा भाजपा की छत्तीसगढ़ इकाई द्वारा अपने एक्स हैंडल से पोस्ट की गई तस्वीर की तरफ था। तस्वीर में हमले के बाद के दृश्य का एनिमेटेड स्वरूप दिखाया गया है और साथ में लिखा है धर्म पूछा, जाति नहीं। अखिलेश ने कहा कि जब जम्मू कश्मीर में भाजपा सरकार ने सब कुछ अपने मन के हिसाब से किया है, तब इतने लोगों की मौत के लिए अपनी जिम्मेदारी से पल्ला नहीं झाड़ सकती।

अखिलेश ने कहा कि भाजपाइयों और उनके संगी-साथियों के खिलाफ देश भर के करोड़ों लोगों के मन में उठ रहा गहरे दुख, रोष और क्रोध से भरा ये आक्रोशित सवाल गलत नहीं है कि अगर भाजपा और उनके संगी-साथी देश भर के पर्यटकों को जम्मू कश्मीर के भ्रमण पर जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, तब उनकी सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध पहले से क्यों नहीं किये गये? अखिलेश ने कहा कि अगर भाजपा सरकार ये बहाना करती है कि हमारे पास सुरक्षा बलों की कमी है, तब इसके लिए भी भाजपा सरकार ही जिम्मेदार है।

वहीं, अखिलेश के बयान पर भाजपा ने पलटवार किया है। भाजपा की उत्तर प्रदेश इकाई के महासचिव और पार्टी के राज्यसभा सदस्य अमरपाल मौर्य ने कहा कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि एक ऐसी पार्टी जो हमेशा तुष्टीकरण की राजनीति करती है। वर्तमान में भी राजनीति कर रही है, जब हम सभी को एक स्वर में पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के खिलाफ बोलना चाहिए। लेकिन, मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं अखिलेश कि आपकी तरह हम तुष्टीकरण की राजनीति नहीं करने वाले है। बल्कि हमारी सरकार इस कायराना हमले के दोषियों को मुंहतोड़ जवाब देगी।

महाराष्ट्र की पहली मुस्लिम महिला अदीबा अहमद बनी आईएएस, देश में 142वें स्थान पर

मुंबई, (एजेंसी)। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) 2024 परीक्षा के अंतिम परिणाम मंगलवार को घोषित किए गए। इनमें महिला अभ्यर्थी शक्ति दुबे ने देश में प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है, जबकि महाराष्ट्र के अर्चित डोंगरे देश में तीसरे स्थान पर आए हैं। इस वर्ष भी महाराष्ट्र के युवाओं ने यूपीएससी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर मराठी ध्वज फहराया। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र के यवतमाल जिले की अदीबा अनम अशफाक अहमद ने भारत में 142वीं रैंक हासिल कर शानदार सफलता हासिल की है। अदीबा महाराष्ट्र की पहली महिला मुस्लिम आईएएस अधिकारी बन गई हैं। अदीबा ने अपनी स्नातक की पढ़ाई अबेदा इनामदार कॉलेज, पुणे से पूरी की। अदीबा ने बी.ए. उर्दू और बी.ए. गणित में स्नातक किया है। इसके बाद उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी। अदीबा हज हाउस आईएएस प्रशिक्षण संस्थान और बाद में जामिया आवासीय प्रशिक्षण संस्थान की छात्रा रही। उनकी सफलता के लिए उनके मित्रों, रिश्तेदारों और परिवार से उन्हें बधाई मिल रही है। इस बीच, अदीबा ने पहले यूपीएससी में साक्षात्कार दिया था, लेकिन उनका नाम अंतिम चयन सूची में नहीं आया। हालांकि, उन्होंने हार नहीं मानी और दोबारा यूपीएससी परीक्षा की तैयारी की। इस वर्ष के प्रयास में अंतिम सूची में उनके चयन पर परिवार ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

- मुंबई की अंकिता पाटिल देश में 303वें स्थान पर

मुंबई के मुलुंड की रहने वाली अंकिता पाटिल ने भी यूपीएससी परीक्षा में सफलता हासिल की है और भारत में 303वीं रैंक हासिल की है। इसलिए उनकी प्रशंसा की जा रही है और पाटिल परिवार में अंकिता की सफलता का जश्न बड़े हर्ष के साथ मनाया जा रहा है। इस सफलता के बाद अंकिता कहती हैं कि, मैं बहुत खुश हूं, मैंने पिछले तीन-चार सालों से कड़ी मेहनत की है। उन सभी वर्षों की कड़ी मेहनत रंग लाई।

दिल्ली समेत 14 राज्यों में चलेगी लू, 12 राज्यों में बारिश की संभावना

-यूपी में अगले कुछ दिन में तापमान पहुंच सकता है 47 डिग्री पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने बुधवार को दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश सहित 14 राज्यों में हीटवेव की चेतावनी जारी की है। इस दौरान कई राज्यों में तापमान में 3-5 डिग्री की बढ़ोतरी हो सकती है। यूपी में अगले पांच दिन में अधिकतम तापमान 47 डिग्री पहुंचने का अनुमान है। राजस्थान के 4 जिलों में आज लू का यलो अलर्ट जारी किया गया है। 14 शहरों में मंगलवार को अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या उससे ऊपर रहा।

वहीं मध्यप्रदेश के 6 जिलों में हीटवेव चलेगी। खजुराहो, नौगांव, पन्ना, सीधी में तापमान 45 डिग्री या इससे ज्यादा रह सकता है। उधर, छत्तीसगढ़ में मंगलवार को बीजापुर-तेलंगाना बॉर्डर पर लू से एक मजदूर की मौत हो गई। वह मिर्ची तोड़ने तेलंगाना गया था। मौसम विभाग ने 3 दिनों तक सरगुजा संभाग, रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग संभाग के 11 जिलों में लू का यलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मणिपुर समेत 12 राज्यों में बुधवार को बारिश की संभावना जताई है। अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में 27 अप्रैल तक भारी बारिश हो सकती है। असम और मेघालय में तेज आंधी-तूफान की आशंका है। 28 अप्रैल तक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, उत्तर प्रदेश में हीटवेव रहेगी। बिहार, झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में अगले 2 दिन तक तेज गर्मी पड़ेगी। अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम में 27 अप्रैल तक बारिश हो सकती है।

महागठबंधन के नेता जेडीयू के मुस्लिम नेताओं को बदनाम करने में जुटे: इकबाल हैदर

पटना (एजेंसी)। वक्फ संशोधन बिल पर जेडीयू ने जब से संसद में समर्थन किया है तब से बिहार की राजनीति के साथ ही देश की सियासत में जेडीयू के स्टैंड को लेकर खूब चर्चा है। इस बीच जेडीयू के मुस्लिम नेताओं की बेचैनी कुछ ज्यादा ही बढ़ी हुई है। दरअसल, वक्फ संशोधन बिल पर जेडीयू के समर्थन के बाद कई मुस्लिम नेताओं ने जेडीयू से इस्तीफा दे दिया है, इससे चुनावी साल में पार्टी की परेशानी बढ़ गई है। खासकर मुस्लिम वोट को लेकर पार्टी में चिंता है। लेकिन इसी बीच जेडीयू के एक बड़े मुस्लिम नेता ने आरोप लगाया है, जिससे बिहार में सियासी पारा चढ़ गया है।

दरअसल, जेडीयू के बड़े मुस्लिम नेता मेहर इकबाल हैदर ने आरोप लगाया है कि जेडीयू के मुस्लिम नेताओं को जान बूझकर षड्यंत्र के तहत हमारे विरोधी महागठबंधन की कुछ पार्टियों की ओर से बदनाम किया जा रहा है। इसमें दावा किया जा रहा है कि जेडीयू के मुस्लिम नेता वक्फ के मुद्दे के बाद पार्टी से नाराज हैं और वे पार्टी छोड़ने वाले हैं। लेकिन, ये सरासर गलत है और उनकी छवि को बदनाम करने की साजिश है।

इकबाल कहते हैं कि वक्फ संशोधन कानून पर नीतीश कुमार नजर बनाए हुए हैं और जब मामला अभी कोर्ट में है। बावजूद इसके हमारे विरोधी नीतीश और जेडीयू को मुस्लिम विरोधी बताने पर लगे हुए हैं। लेकिन, मुस्लिम समाज को मैं बताना चाहता हूं कि जब तक नीतीश हैं तब तक मुस्लिम समाज का कोई अहित नहीं कर सकता है।

वहीं, जेडीयू नेता के आरोप पर आरजेडी ने पलटवार किया है। आरजेडी के प्रवक्ता एजाज अहमद कहते हैं कि जेडीयू नेता का आरोप सरासर गलत है और ये सब जनता के गुस्से से बचने के लिए बयान दे रहे हैं। जेडीयू के नेता बीजेपी के विचारों में अपने को समाहित कर चुके हैं और उनके नेता नीतीश कुमार चुप्पी साधे हुए हैं।

हिमालय में सालों से कम हो रही बर्फबारी, जल सुरक्षा खतरे में?

-दो अरब की आबादी पिघलते ग्लेशियरों से निकलने वाले पानी पर निर्भर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमालय-हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला में बर्फबारी पिछले 23 सालों में अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। यह हालात उन दो अरब लोगों के लिए गंभीर खतरा है जो पिघलते ग्लेशियरों से निकलने वाले पानी पर निर्भर हैं। एक रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि हिमालय पर्वत श्रृंखला में बर्फ की कमी का यह रुझान लगातार तीसरे साल भी जारी है और इससे क्षेत्र में जल सुरक्षा खतरे में पड़ गई है।

हिमालय-हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला अफगानिस्तान से म्यांमार तक फैली है, जबकि आर्कटिक और अंटार्कटिक महाद्वीप के बाद बर्फ और ग्लेशियरों का सबसे बड़ा भंडार इसी क्षेत्र में है। ये जलाशय करीब दो अरब लोगों के लिए ताजे पानी का मुख्य स्रोत हैं, जबकि कृषि, घरेलू इस्तेमाल और अन्य जरुरतों के लिए भी इन्हीं जलाशयों पर निर्भर रहा जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक, इस क्षेत्र में मौसमी बर्फ आवरण सामान्य से 23.6 फीसदी कम है, जो पिछले 23 सालों में सबसे निचला स्तर पर है। रिपोर्ट के मुख्य लेखक शेर मोहम्मद ने कहा कि इस साल बर्फबारी जनवरी के अंत में शुरू हुई और पूरे शीतकाल में औसत से कम रही। उन्होंने कहा कि इस कमी से नदी के प्रवाह में संभावित कमी, भूजल पर निर्भरता में वृद्धि, और सूखे जैसे जोखिम में वृद्धि हो सकती है। क्षेत्र के कई देशों ने पहले ही सूखे की चेतावनी जारी कर दी है, जबकि फसल की पैदावार और पानी की उपलब्धता भी खतरे में है। यह स्थिति उस आबादी के लिए और भी जटिल है जो लंबे समय तक चलने वाली, तीव्र और बार-बार आने वाली गर्मी की लहरों से जूझती हैं।

भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, म्यांमार और नेपाल अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र के सदस्य देश पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ता हैं। अंतर-सरकारी निकाय ने क्षेत्र की 12 प्रमुख नदी घाटियों पर निर्भर देशों से जल प्रबंधन, सूखे की तैयारी, पूर्व चेतावनी प्रणालियों में सुधार करने और क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने का आग्रह किया है। रिपोर्ट में विशेष रूप से बताया गया है कि दक्षिण-पूर्व एशिया की दो सबसे लंबी नदियां मेकांग और सालवीन, जो चीन और म्यांमार को पानी देती हैं, उनकी करीब आधी बर्फ पिघल चुकी है। आईसीआईएमओडी के महानिदेशक ने दीर्घकालिक समाधान के लिए नीतिगत बदलावों का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि कार्बन उत्सर्जन ने हिंदुकुश पर्वतमाला में अभूतपूर्व बर्फ हानि के मार्ग को अपरिवर्तनीय बना दिया है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए तुरंत उपाय किए जाने की जरुरत पर जोर दिया। संयुक्त राष्ट्र के विश्व मौसम विज्ञान संगठन के मुताबिक एशिया जलवायु संबंधी आपदाओं से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र है।

मार्च महीने में एक रिपोर्ट जारी की गई है,

जिसके मुताबिक पिछले छह सालों में से पांच साल ऐसे थे जिनमें ग्लेशियरों में सबसे तेज गिरावट देखी गई। यह स्थिति इस क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिरता और मानव जीवन के लिए बढ़ती कठिनाइयों का संकेत दे रही है।

पहलगाम में मजहबी आतंक का सबसे बर्बर चेहरा

ललित गर्ग

आतंक से जो जन्मती है, वह संस्कृति नहीं होती है, उसमें पाशविकता होती है, उसमें जानवर विद्यमान होते हैं। ऐसे व्यक्ति, संगठन एवं देश किसी के प्रिय नहीं हो सकते, वे मानवता को त्राण नहीं, संत्रास देते हैं। लगातार हो रहे इन हमलों के बाद भी हिन्दू समुदाय शांति और करुणा की ही बात करता आया है। पर एक बड़ा सवाल ये है कि आखिर कब तक यह सिलसिला चलेगा?

जम्मू-कश्मीर में स्थित पहलगाम, जिसे ह्यमिनी स्विट्जरलैंडह्न के नाम से जाना जाता है, मंगलवार को एक भीषण, दर्दनाक एवं अमानवीय आतंकी हमले का गवाह बना, एक बार फिर जिहादी आतंक का घिनौना-बर्बर चेहरा दिखा। आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोष-निहत्थे पर्यटकों की जिस तरह पहचान पता करके गोलियां बरसाईं, उससे यही पता चलता है कि वे केवल खौफ ही नहीं पैदा करना चाहते थे, बल्कि बड़ी संख्या में लोगों का खून बहाकर दुनिया का ध्यान भी खींचना चाहते थे। यह आतंकवाद एवं सांप्रदायिक घृणा का अब तक का सबसे घिनौना एवं बर्बर हमला एवं चेहरा है, जिसमें हिन्दू सुनकर चलाई गोलियां। जो पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मूल एजेंडे का हिस्सा है। इस जघन्य एवं त्रासद घटना में निर्दोष पर्यटकों को तब मौत की गहरी नींद सुलाया गया, जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति भारत में हैं और भारतीय प्रधानमंत्री सऊदी अरब में। इस हमले ने यह प्रकट किया कि कश्मीर में बचे-खुचे आतंकी किसी भी सीमा तक गिरने पर आमादा हैं। आतंकियों ने उन पर्यटकों को निशाना बनाया, जो कश्मीरियों की रोजी-रोटी को ही सहारा देने कश्मीर गए थे। यह हमला इतना वीभत्स था कि उसने हर संवेदनशील दिल को झकझोर कर रख दिया। आतंकियों ने नृशंसता की सारी सीमाएं पार करते हुए अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसमें 28 पर्यटक, जिनमें दो विदेश नागरिक भी थे, की दर्दनाक मौत हो गई।

हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान में स्थित प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (टीआरएफ) ने ली है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि हमलावरों ने दक्षिण कश्मीर के कोकेरनाग से होते हुए किश्तवाड़ के रास्ते बैसरन तक पहुंच बनाई। घटना दोपहर करीब तीन बजे की है, जब बैसरन के घास के मैदान और आसपास के इलाकों में भारी संख्या में पर्यटक मौज-मस्ती कर रहे थे, कुछ खच्चरों की सवारी का आनंद ले रहे थे तो कुछ परिवार पिकनिक मना रहे थे। तभी घात लगाए बैठे आतंकियों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। इस घटना के लिये सीधे तौर पर पाकिस्तान जिम्मेदार है। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि चंद दिन पहले ही पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष आसिम मुनीर ने किसी जिहादी की तरह हिंदुओं और भारत के खिलाफ अपनी घृणा का भद्दा प्रदर्शन किया था। अबू मूसा का वह भाषण और उसके तुरंत बाद हुआ पहलगाम नरसंहर दशार्ता है कि पीओके में बैठे आतंकी सरगना न केवल भारत विरोधी जहरीला प्रचार फैला रहे हैं, बल्कि कश्मीर घाटी की शांति, विकास एवं सौहार्द को बाधित करने की हर कोशिश को सफल बनाने में जुटे हैं। वे आगामी समय में घाटी को फिर से अशांत करने की योजना पर भी काम कर रहे हैं। इस भीषण आतंकी हमले के बाद घाटी में पर्यटन संबंधी कारोबार करीब-करीब ठप पड़ना तय है। आखिर इतनी भयावह घटना के बाद कौन पर्यटक कश्मीर की ओर रुख करेगा? लम्बे समय की शांति, अमन-चैन एवं खुशहाली के बाद एक बार फिर कश्मीर में अशांति एवं आतंक के बादल मंडराये हैं। धरती के स्वर्ग की आभा पर लगे ग्रहण के बादल छंटने लगे थे कि एक बार फिर पहलगाव में आतंकियों ने पूरे देश में आक्रोश की लहर पैदा करने वाली घटना को अंजाम दिया है। अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पहली बार कश्मीर में इतना बड़ा आतंकी हमला हुआ है। आतंकियों और उनके समर्थकों को करारा जवाब दिया जाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। पहलगाम में आतंकी हमले की गंभीरता इससे प्रकट होती है कि जहां गृहमंत्री अमित शाह आनन-फानन श्रीनगर के लिए रवाना हुए, वहीं सऊदी अरब गए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी यात्रा बीच में छोड़कर दिल्ली आ गये। दिल्ली आते ही एयरपोर्ट पर ही एक मीटिंग की, जिसमें अजित डोभाल से गंभीर मंत्रणा के बाद इस आतंकवादी घटना के खिलाफ एक्शन लेना प्रारंभ कर दिया। मोदी एवं शाह के एक्शन से उम्मीद बंधी है कि इस बार कुछ निर्णायक होगा। पहलगाम की सुंदर घाटी को रक्त रंजित करने के लिये आतंकवाद का जिन्न भले ही निकल आया हो, लेकिन इस बार निर्दोष एवं बेकसूर लोगों का रक्त व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। यह हमला पाकिस्तान की बौखलाहट का नतीजा है, उसी के इशारे पर किया गया। यह मानने के पुख्ता एवं पुष्ट कारण हैं कि पाकिस्तान सुलगते बलूचिस्तान से दुनिया का ध्यान हटाना चाहता है और उसे यह रास नहीं आ रहा कि कश्मीर में स्थितियां तेजी से सामान्य होती जा रही हैं। भारत को पाकिस्तान के शैतानी इरादों के प्रति और अधिक सतर्क रहना चाहिए था। वह न पहले भरोसे लायक था और न अब। अब आतंकियों को शह और सहयोग देने वाले पाकिस्तान को निर्णायक रूप से सबक सिखाया जाना ज्यादा जरूरी हो गया है।

तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण आतंकवाद के खिलाफ भारत की एक बड़ी जीत बनी है, जिससे भी पाकिस्तान भयभीत बना। मुंबई सहित देश के अन्य हिस्सों और विशेषतः जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमले की पूरी प्लानिंग के पीछे पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई व उसकी जमीन पर सक्रिय आतंकवादी संगठनों का हाथ न केवल था, बल्कि आर्थिक एवं अन्य तरह का सहयोग भी शामिल है। पहलगाम की ताजा घटना हो या बार-बार होने वाली आतंकी घटनाएं तमाम सबूत होने के बाद भी पाकिस्तान इन हमले के पीछे अपनी कोई भूमिका होने से इनकार करता रहा है। हालांकि वह आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख हाफिज सईद और जकी-उर-रहमान लखवी जैसे आतंकवादी सरगनाओं को बचाता भी रहा है। राणा के माध्यम पाकिस्तान का पूरा सच देश एवं दुनिया के सामने आने का डर पाकिस्तान को सता रहा था, तभी उसने इस पहलगाम की घटना को अंजाम दिया। लेकिन अब हद हो गयी। अब एक साथ कई मोर्चें पर आतंकवाद के खिलाफ कमर कसनी होगी, अब भारतीय सुरक्षा एजेंसियों का असली बड़ा काम यहां से शुरू करना होगा। अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सीमा पार यानी पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से लड़ने में भारत का साथ देने का संकल्प एकबार फिर दोहराया है, इसी तरह रूस भी भारत के साथ है। अनेक देशों ने भारत की आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में हर तरह से सहयोग का वादा किया है। अब समय आ गया है पाकिस्तान को उसकी जमीन दिखाने एवं उसके विध्वसंक एवं विनाशकारी मनसूबों को नेस्तनाबूंद करने का।

तीन दशकों से कश्मीर घाटी दोषी और निर्दोषी लोगों के खून की हल्दीघाटी बनी रही है। लेकिन वर्ष 2014 के बाद से, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से वहां शांति एवं विकास का अपूर्व वातावरण बना है, यही पाकिस्तान को रास नहीं आ रहा है। कश्मीर सहित समूची दुनिया से आतंकवाद को समाप्त करने का नेतृत्व करके मोदी एक और करिश्मा घटित करने को तत्पर होना भी पाकिस्तान के लिये बड़ी चुनौती बना है, पहलगाव जैसी घटनाएं उनके इरादों को कमजोर नहीं, बल्कि बलशाली ही बनाती है। अब कश्मीर में आतंक का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला होना ही चाहिए। दुनिया के शक्तिसंपन्न राष्ट्र भी मंथन करें आतंक रूपी विष और विषमता को समाप्त करने का, शांतिपूर्ण दुनिया निर्मित करने का। अब समय आ गया है कि पाकिस्तान में घूस कर सबक सिखाने का। सर्जिकल अटैक ही पुख्ता जबाव हो सकता है।

आतंक से जो जन्मती है, वह संस्कृति नहीं होती है, उसमें पाशविकता होती है, उसमें जानवर विद्यमान होते हैं। ऐसे व्यक्ति, संगठन एवं देश किसी के प्रिय नहीं हो सकते, वे मानवता को त्राण नहीं, संत्रास देते हैं। लगातार हो रहे इन हमलों के बाद भी हिन्दू समुदाय शांति और करुणा की ही बात करता आया है। पर एक बड़ा सवाल ये है कि आखिर कब तक यह सिलसिला चलेगा? भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। भारत के बढ़ते कदमों को रोकने के लिये पाकिस्तान आतंकी संगठन और आतंक का सहारा ले रही हैं। भारत सरकार की नीति, सशक्त सुरक्षा व्यवस्था, सरकार की सतर्कता के चलते ही पाकिस्तान, वहां के आतंकवादी संगठन एवं आतंकवादी अपने मनसूबों में कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। लगातार असफलता से खीझे एवं बौखलाये हुए आतंकी कोई-न-कोई नई और अधिक खौफनाक आतंकी घटना को अंजाम देने में जुटे रहते हैं, हमारी सुरक्षा एजेंसियों को अधिक सतर्कता बरतने की अपेक्षा है।

संपादकीय

नौकरशाही का ढर्रा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भारत की नौकरशाही और नीति-निर्माण प्रक्रिया पुराने ढर्रे पर नहीं चल सकती। इसलिए कि उनकी सरकार जिन नीतियों पर काम कर रही है, वे अगले एक हजार साल के भविष्य को आकार देंगी। नई दिल्ली में सिविल सेवा दिवस समारोह को संबोधित करते हुए सोमवार को प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि अब ऐसा माहौल बनाया जा रहा है कि जो आम नागरिकों के बीच उद्यमिता को प्रोत्साहित करता है और उन्हें बाधाओं से पार पाने में मदद करता है। इस संदर्भ में उन्होंने औद्योगीकरण और उद्यमिता की गति को नियंत्रित करने वाले नियामक के रूप में नौकरशाही की पुरानी भूमिका का जिक्र भी किया और कहा कि अब ऐसा नहीं चलने वाला। खासकर इसलिए कि एक तो सरकार संकल्पबद्ध है कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, और दूसरा इसलिए भी कि आज का युवा बेहद महत्त्वाकांक्षी है, और किसान और महिलाओं जैसे सामाजिक समूहों के सपने ऊंचे हैं। ऐसे में सरकार की महत्त्वाकांक्षा और आमजन के सपने को पूरा करने में कारगर भूमिका नौकरशाही तभी निभा पाएगी जब वह अपने पुराने ढर्रे को बदले। कामकाज में जवाबदेही हमेशा से तवज्जो पाती रही है, और जवाबदेही के पैमाने पर ही नौकरशाही को चाक-चौबंद रखा जाता रहा है। लेकिन अब नौकरशाही को नई चुनौतियों और नये उभरे आकांक्षी समूहों के सपनों को साकार करने में उत्प्रेरक की भूमिका में आना होगा। उसे अपने कामकाज की गति असाधारण तरीके से तेज रखनी होगी। दरअसल, आज के युवा की परवरिश भी पुराने ढर्रे पर नहीं हुई है। वह अपने कार्यों को लेकर परिणामोन्मुख तेवर रखता है, और अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों को पूरा करने में स्वयं भी कोई शिथिलता नहीं बरतता। अदद नौकरी पाने का आकांक्षी भी नहीं रहा। अब वह उद्यमिता से प्रेरित है, इसलिए महज नौकरी पाने की लाइन में खटना नहीं चाहता। दरअसल, तेजी से बदल रहे समय के साथ कदमताल बनाए रखना हर किसी के लिए चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है और कोई भी दौड़. में पीछे छूट जाने को तैयार नहीं है।

चिंतन-मनन

अपनेपन का प्रेम असली प्रेम

जब प्रेम बहुत गहरा होता है, तब तुम किसी भी गलतफहमी के लिए पूरी जिम्मेवारी लेते हो। पल भर के लिए ऊपरी तौर से नाराजगी व्यक्त कर सकते हो, परन्तु जब इस नाराजगी को दिल से महसूस नहीं करते, तब तुम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ पाते हो। तब तुम उस अवस्था में हो जहां सभी समस्याएं और मत-भेद मिट जाते हैं और केवल प्रेम झलकता है। प्रायः हम मतभेदों में उलझे रहते हैं क्योंकि अपने वास्तविक स्वभाव से दूर हो गए हैं। प्रेम के नाम पर हम दूसरों को इच्छानुसार चलाना चाहते हैं। यह स्वाभाविक है कि जब हम किसी से प्रेम करते हैं तो हम चाहते हैं कि वे त्रुटिहीन हो। तुम पहाड़ी के ऊपर से जमीन के गड्ढों को नहीं देख सकते।

इसी प्रकार, उन्नत चेतना की अवस्था से दूसरों की त्रुटियां नजर नहीं आती। परन्तु जमीन आकर गड्ढों को (दोषों को) देख सकते हो। और गड्ढों को भरना चाहते हो तो उन्हें देखना ही होगा। हवा में रहकर तुम घर नहीं बना सकते। गड्ढों को देखे बिना, उनको भरे बिना, कंकड़-पत्थर हटाए बिना, जमीन को नहीं जोत सकते।

इसीलिए जब तुम किसी से प्रेम करते हो और उनमें दोष ही दोष देखते हो तो उनके साथ रहो और गड्ढे भरने में उनकी मदद करो। यही ज्ञान है। तुम किसी को प्यार क्यों करते हो? क्या उनके गुणों के लिए या मित्रता और अपनेपन के कारण? अपनत्व महसूस किए बिना, केवल उनके गुणों के लिए, तुम किसी से प्रेम कर सकते हो!

इस प्रकार का प्रेम प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या पैदा करता है। परन्तु जब प्रेम आत्मीयता के कारण होता है, तब ऐसा नहीं होता। जब तुम किसी को उनके गुणों के लिए चाहते हो और जब उनके गुणों में बदलाव आता है, या जब तुम उनके गुणों के आदी हो जाते हो, तुम्हारा प्रेम भी बदल जाता है। परन्तु प्रेम यदि अपनत्व के भाव से है, क्योंकि वे तुम्हारे अपने हैं, तब वह प्रेम जन्म-जन्मान्तरों तक रहता है।

लोग कहते हैं, मैं ईश्वर से प्रेम करता हूं क्योंकि वे महान है। और यदि यह पाया जाए कि ईश्वर साधारण हैं, हमारे जैसे ही एक व्यक्ति, तब तुम्हारा प्रेम समाप्त हो जाएगा। यदि तुम ईश्वर से इसलिए प्रेम करते हो क्योंकि वे तुम्हारे अपने हैं, तब वे चाहे जैसे भी हों, चाहे वे रचना करें

बच्चे भविष्य की नींव बच्चों को मजदूरी नहीं किताबें दें

किशन सनमुखदास भावनानी

वैश्विक रूप से यह देखा गया है कि अनेक कमर्शियल संस्थानों, औद्योगिक संस्थानों, दवा उद्योग, खेत खलियानों गृहउद्योग, इत्यादि अनेक व्यवसायिक क्षेत्रों में छोटे-छोटे बच्चों से श्रम करवाया जाता है, क्योंकि उन क्षेत्रों में कामों के लिए यह छोटे-छोटे बच्चे आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं और अपेक्षाकृत रोजी या मजदूरी भी इनकी कम होती है, और डेली वेजेस के रूप में रखकर आसानी से अपना काम करवा लेते हैं।

दूसरी तरफ हम अनेक चौराहों, बाजारों, हाट बाजारों, में हमने छोटे-छोटे बच्चों को अकेले या अपने मातापिता के साथ खिलौने,खाद्य पदार्थों इत्यादि बेचने को देखते रहते हैं।अनेक बड़ी या छोटी सिटीओ में तो सिग्नल स्टेशनों, बूथों पर अक्सर यह छोटे बच्चे भीख मांगते, सामान बेचते, हमें दिखते रहते हैं। यह नजारा हर छोटी बड़ी सिटी के चौराहों पर आसानी से देखने को मिलता है। संयुक्त राष्ट्र बाल श्रम उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित करते हुए कि 2025 तक इस प्रथा को समाप्त करने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है।

बात अगर हम विश्व बाल श्रम की करें तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आई संयुक्त राष्ट्र और यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार,संयुक्त राष्ट्र की एक नई रिपोर्ट दशार्ती है कि दो दशकों में पहली बार, बाल श्रमिकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है।दुनिया भर में काम पर लगाए जाने वाले बच्चों का आँकड़ा अब 16 करोड़ पहुँच गया है।पिछले चार वर्षों में इस संख्या में 84 लाख की वृद्धि हुई है। गुरुवार को जारी साझा रिपोर्ट के मुताबिक कोविड-19 महामारी के कारण लाखों अन्य बच्चों पर जोखिम मंडरा रहा है।चाइल्ड लेबर- ग्लोबल एस्टिमेट्स 2020 ट्रेंड्स रोड फॉरवर्ड नामक रिपोर्टअंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) और संयुक्त राष्ट्र बाल कोष(यूनिसेफ) द्वारा जारी की गई है...यूनीसेफ की कार्यकारी निदेशक, ने कहा है कि इस रिपोर्ट में सरकारों और अन्तरराष्ट्रीय विकास बैन्कों से आग्रह किया गया है कि वे ऐसे कार्यक्रमों में निवेश को प्राथमिकता दें, जो बच्चों को कार्यबल से हटाकर स्कूल में वापस ला सकें, उन्होंने देशों से बेहतर सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का भी आह्वान किया ताकि परिवारों को इस विकल्प को अपनाने की जरूरत के बारे में ही ना सोचना पड़े।

12 जून को बाल श्रम के खिलाफ विश्व दिवस से पहले जारी की गई इस रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि पिछले 20 वर्षों में पहली बार, बाल श्रम को समाप्त करने की दिशा में हुई प्रगति में व्यवधान आया है। वर्ष 2000 और 2016 के बीच,बाल मजदूरों की संख्या में नौ करोड़ 40 लाख की कमी दर्ज की गई थी, मगर अब गिरावट का यह रूझान पलट गया है।यह 5 से 11 वर्ष की आयु के बीच काम करने वाले बच्चों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की ओर इशारा करता है, जो कुल वैश्विक आँकड़ों का आधे से ज्यादा है। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि महामारी के परिणाम स्वरूप 2022 के अन्त तक, वैश्विक स्तर पर, 90 लाख अतिरिक्त बच्चों को बाल श्रम में धकेल दिये जाने का खतरा है। कोविड-19 के कारण महसूस किये गए आर्थिक झटकों और स्कूल बन्द होने के कारण, जो बच्चे पहले से ही काम करने के लिये मजबूर थे, उन्हें या तो लम्बे घण्टों तक काम करना पड़ रहा है या वे खराब परिस्थितियों में काम कर रहे हैं। वहीं, निर्बल परिवारों में कामकाज और आमदनी का जरिया खत्म होना, बड़ी संख्या में अन्य बच्चों को बाल श्रम के सबसे खराब रूपों की ओर धकेले जाने की वजह बन सकता है। उन्होंने कहा,अब, वैश्विक तालाबन्दी के दूसरे वर्ष में, स्कूल बन्द होने, आर्थिक व्यवधान और सिकुड़ते राष्ट्रीय बजट के कारण, परिवार पीड़ादायक विकल्प चुनने के लिये मजबूर होते जा रहे हैं। रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्षः

- कृषि क्षेत्र में बाल मजदूरी करने वाले बच्चों का आँकड़ा 70 प्रतिशत है, सेवा क्षेत्र में 20 प्रतिशत और उद्योगों में 10 प्रतिशत बच्चे हैं। 5 से 11 वर्ष के लगभग 28 प्रतिशत बच्चे और 12 से 14 वर्ष की आयु के 35 प्रतिशत बाल श्रमिक, स्कूल से बाहर हैं। बाल श्रमिकों के तौर पर, लड़कियों की तुलना में लड़कों की संख्या अधिक है. लेकिन, अगर प्रति सप्ताह 21 घण्टे घर में किये गए काम को ध्यान में रखा जाए, तो बाल श्रम का यह लैंगिक अन्तर भी कम हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बाल श्रम 14 प्रतिशत है, जो शहरी क्षेत्रों में 5 प्रतिशत के आँकड़े से लगभग तीन गुना अधिक है।

बात अगर हम भारत की करें तो भारत में भी अनेक बाल श्रमिक हैं। और बाल श्रमिकों की तेजी से संख्या भी बढ़ रही है हालांकि केंद्र और राज्य सरकारों ने इसके खिलाफ कड़े कदम उठाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है। देखा जाए तो बाल श्रमिक निम्नलिखित रुप से काम करते हैं??बाल मजदूर - वे बच्चे जो कारखानों, कार्यशालाओं, प्रतिष्ठानों, खानों और घरेलू श्रम जैसे सेवा क्षेत्र में मजदूरी या बिना मजदूरी में काम कर रहे हैं।गली - मोहल्ले के बच्चे - कूड़ा बीनने वाले, अखबार और फेरी लगाने वाले और भीख मांगने वाले।बंधुआ बच्चे - वे बच्चे जिन्हें या तो उनके माता-पिता ने पैसों की खातिर गिरवी रखा है या जो कर्ज को चुकाने के चलने मजबूरन काम कर रहे हैं।वर्किंग चिल्ड्रन - वे बच्चे जो कृषि में और घर-गृहस्थी के काम में पारिवारिक श्रम का हिस्सा हैं।यौन शोषण के लिए इस्तेमाल किए गए बच्चे - हजारों बालिक बच्चे और नाबालिक लड़कियां यौन शोषण की जद में हैं।घरेलू गतिविधियों में लगे बच्चे - घरेलू सहायता के रूप में काम। इसमें लड़कियों का शोषण सबसे ज्यादा है - बच्चे छोटे भाई-बहनों की देखभाल, खाना पकाने, साफ-सफाई और ऐसी अन्य घरेलू गतिविधियों में लगे हुए हैं। हालांकि इन गतिविधियों को रोकने के लिए भारत में अनेक कानून कायदे बने हैं जैसे कि,खदान अधिनियम 1952 - 18 साल से कम आयु वाले बच्चों को खदानों में काम करने पर प्रतिबन्ध लगाता है

बिहार में विधानसभा चुनाव से पहले महत्वपूर्ण राजनीतिक मंथन

राजद, कांग्रेस और कुछ छोटी पार्टियों से मिलकर बना महागठबंधन कड़ा चुनौती दे रहा है। गठबंधन पर चर्चा के लिए पिछले हफ्ते दिल्ली में राजद और कांग्रेस के शीर्ष नेताओं की बैठक हुई थी। 2020 के बाद से राजनीतिक पुनर्संयोजन-वीआईपी का महागठबंधन में शामिल होना, एलजेपी का एनडीए के साथ गठबंधन और राष्ट्रीय लोक समता पार्टी का जेडी(यू) में विलय-चुनावी तस्वीर को जटिल बनाते हैं।

इस साल के अंत में बिहार में होने वाले चुनाव काफी अप्रत्याशित हैं। अभी तक, भाजपा, राजद, कांग्रेस या जद (यू) के लिए कोई आसान रास्ता नहीं है। बिहार की राजनीति में मंथन चुपचाप हो रहा है। सत्ता की गत्यात्मकता में संभावित बदलाव हो सकता है। पिछले दो दशकों से जनता दल (यूनाइटेड) के बाद दूसरे स्थान पर रहने वाली भाजपा प्रमुख भूमिका निभाने की उम्मीद कर रही है। राजद सरकार का मुखिया बनना चाहता है।

दो महत्वपूर्ण शक्ति समूह लड़ाई में हैं। एक तरफ एनडीए और दूसरी तरफ महागठबंधन, जिसमें राजद, कांग्रेस और वामपंथी दल शामिल हैं। पार्टी के भीतर और भीतरी गतिशीलता पूरे जोश में है। एनडीए और महागठबंधन एक बड़े राजनीतिक मुकाबले के लिए सोची-समझी चाल चल रहे हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव जीतने के बाद, लगातार उन राज्यों में जीत से उत्साहित भाजपा ने अब बिहार पर नजरें गड़ा दी हैं। बिहार की जातिगत राजनीति दिलचस्प है। पिछड़े वर्ग की आबादी 63.13प्रतिशत है, जबकि सवर्ण जातियां केवल 15.52प्रतिशत हैं। पिछड़े वर्ग की श्रेणी में अन्य पिछड़ा वर्ग 27.12 है, जबकि अत्यंत पिछड़ा वर्ग की आबादी 36प्रतिशत है। दलितों की संख्या लगभग 19.65 है और यादवों की संख्या 14.26प्रतिशत है। नीतीश कुमार की कुर्मी जाति, कुर्मी, जिसे ओबीसी के रूप में भी वर्गीकृत किया गया है, की आबादी 2.87प्रतिशत है। पिछले विधानसभा चुनावों में, लगभग 15प्रतिशत आबादी वाली उच्च जातियों ने कई पार्टियों में टिकट वितरण पर अपना दबदबा बनाया था। भाजपा ने अपने 47.3प्रतिशत टिकट उच्च जाति के उम्मीदवारों को दिये थे, जबकि कांग्रेस ने अपनी 40प्रतिशत सीटें उच्च जातियों को दी थीं।

2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में, महागठबंधन 243 सदस्यीय विधानसभा में साधारण बहुमत हासिल नहीं कर सका, केवल 12 सीटों से चूक गया। राजद सदन में सबसे बड़ी पार्टी थी, लेकिन सरकार नहीं बना सकी।

2025 के चुनावों के लिए, जेडी(यू) ने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद का चेहरा बनाने की पुष्टि की है। जाने-माने चुनाव विशेषज्ञ प्रशांत किशोर ने भविष्यवाणी की थी कि नीतीश कुमार अपना राजनीतिक करियर खत्म कर देंगे। राजद ने अपने नेता तेजस्वी यादव को चुना है। कांग्रेस ने अभी तक अपने पत्ते नहीं खोले हैं। इस महीने से शुरू हुई कांग्रेस और राजद के बीच बैठकों का सिलसिला जारी है।

जनता दल (यूनाइटेड) पार्टी और भाजपा गठबंधन वर्तमान में बिहार पर शासन कर रहे हैं। नीतीश कुमार की बिगड़ती सेहत, जातिगत संतुलन और गठबंधन के कामकाज ने बिहार को एनडीए के लिए राजनीतिक रूप से अप्रत्याशित बना दिया है। अगर भाजपा नीतीश को चुनती भी है, तो उनके स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे चुनाव परिणाम को काफी प्रभावित कर सकते हैं। जेडीयू भाजपा के साथ ज्यादा सीटों के लिए मोलभाव करना चाहती है। 2020 में जेडी(यू)ने 115 सीटों पर चुनाव लड़ा, लेकिन सिर्फ 43 सीटें ही जीत पायी थी। इसके विपरीत, भाजपा ने 110 सीटों पर चुनाव लड़ा और 74 सीटें जीतीं।

राजद, कांग्रेस और कुछ छोटी पार्टियों से मिलकर बना महागठबंधन कड़ा चुनौती दे रहा है। गठबंधन पर चर्चा के लिए पिछले हफ्ते दिल्ली में राजद और कांग्रेस के शीर्ष नेताओं की बैठक हुई थी। 2020 के बाद से राजनीतिक पुनर्संयोजन-वीआईपी का महागठबंधन में शामिल होना, एलजेपी का एनडीए के साथ गठबंधन और राष्ट्रीय लोक समता पार्टी का जेडी(यू) में विलय-चुनावी तस्वीर को जटिल बनाते हैं। 2020 के बाद से एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम एनडीए के भीतर सत्ता समीकरण में बदलाव रहा है, जिसमें भाजपा मजबूत होकर उभरी है। भाजपा ने रणनीतिक रूप से गैर-प्रमुख अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और गैर-प्रमुख दलित समुदायों को अपने पक्ष में किया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दो दिनों के लिए बिहार गये। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जल्द ही बिहार का दौरा करेंगे।

राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने एक चौंकाने वाली घोषणा करते हुए कहा कि वह अपने समाजवादी सहयोगी नीतीश कुमार के साथ सुलह करने के लिए तैयार हैं। इस बयान के जवाब में नीतीश ने कहा कि उन्होंने अनजाने में राजद के साथ गठबंधन कर लिया था। हालांकि, तेजस्वी यादव ने जोर देकर कहा कि महागठबंधन में नीतीश के लिए कोई जगह नहीं है। कई लोगों का मानना है कि अपने यू-टर्न के लिए मशहूर नीतीश पाला बदल सकते हैं।

भारत के विपक्षी इंडिया ब्लॉक ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता और बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को आगामी बिहार विधानसभा चुनावों के लिए अपनी समन्वय समिति का प्रमुख नियुक्त किया है। यह निर्णय 17 अप्रैल को पटना में छह गठबंधन सहयोगियों की बैठक के दौरान लिया गया।

महागठबंधन में कांग्रेस और वामपंथी दलों को चिंता है कि राजद सीट बंटवारे के समझौते को अंतिम रूप देने के लिए आखिरी समय तक इंतजार करेगा। कांग्रेस पार्टी 2020 में उन्हें दी गयी कमजोर सीटों से नाखुश है। उसने पिछले चुनाव में जिन 70 सीटों पर चुनाव लड़ा था, उनमें से उन्हें केवल 19 सीटें ही मिलीं। सीपीआई (एमएल), जिसने 2020 में अच्छा प्रदर्शन किया था, सीटों का बड़ा हिस्सा चाहती है। 2005 के बाद से, आरजेडी को 2015 और 2022 में छोटी अवधि को छोड़कर, सत्ता हासिल करने में कठिनाई हो रही है।

फिलहाल, तेजस्वी यादव के सामने दो मुख्य कार्य हैं। सबसे पहले, उन्हें मुसलमानों और यादवों के अपने मूल समूहों से परे अन्य जातियों को शामिल करने के लिए समर्थन का विस्तार करने की आवश्यकता है। इसके लिए एक मजबूत जमीनी स्तर का अभियान शामिल है, क्योंकि पारंपरिक मतदान के रुझान बदल रहे हैं। कांग्रेस ने बिहार में युवा नेतृत्व विकसित नहीं किया है। इसका पुराना कोर ग्रुप मुस्लिम और दलितों के वोट बैंक दूसरे दलों में चले गये हैं। पार्टी ने हाशिए पर पड़े समुदायों पर नजर रखने के लिए 'संविधान नेतृत्व कार्यक्रम' शुरू किया है।

मुख्य दलों को अपने समूहों के भीतर और बाहर दोनों जगह चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, और एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बदलाव की उम्मीद है। ध्यान देने वाली बात यह है कि नीतीश कुमार का ईबीसी बरकरार है और आरजेडी-कांग्रेस गठबंधन को चुनौती दे रहा है। नवंबर से पहले कई और बदलाव हो सकते हैं, जिन्हें देखना दिलचस्प होगा। राजनीति में एक सप्ताह लंबा माना जाता है। छह महीने वास्तव में लंबे होते हैं।

- कल्याणी शंकर

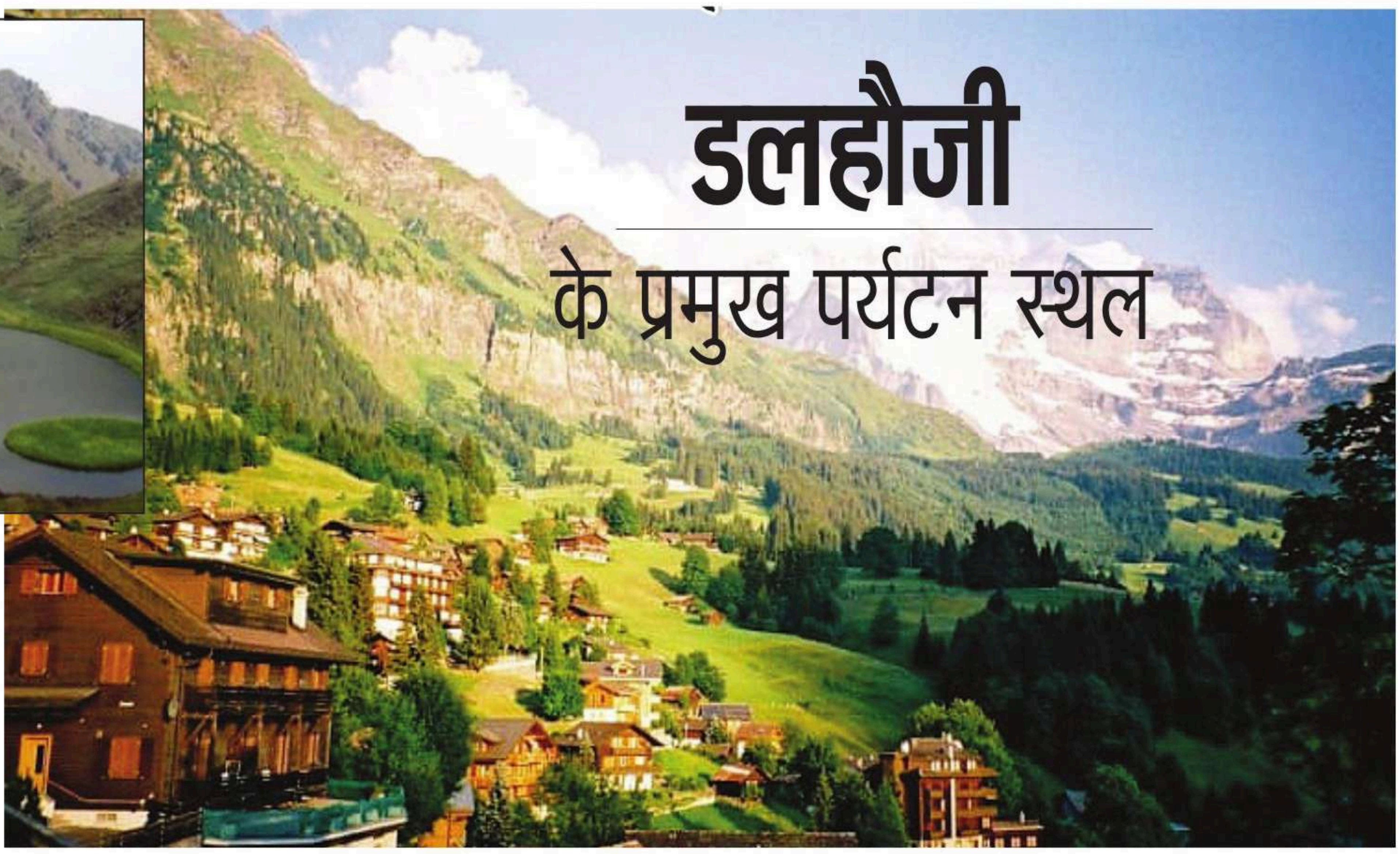

डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थल

सतधारा झरना या फाल्स हिमाचल प्रदेश की चंबा घाटी में स्थित है, जो बर्फ से ढके पहाड़ों और ताजे देवदार के पेड़ों के शानदार दृश्यों से घिरा हुआ है। 'सतधारा' का मतलब होता है सात झरने, इस झरने का नाम सातधारा सात खूबसूरत झरनों के जल के एक साथ मिलने की वजह से रखा गया है। इन झरनों का पानी समुद्र से 2036 मीटर ऊपर एक बिंदु पर मिलता है। यह जगह उन लोगों के लिए एक खास है, जो शहर की भीड़-भाड़ वाली जिंदगी से दूर जाकर शांति का अनुभव करना चाहते हैं। सतधारा फाल्स अपने औषधीय गुणों की वजह से भी जानी जाती है, क्योंकि यहां के पानी में अभ्रक पाया जाता है, जिसमें त्वचा के रोग ठीक करने के गुण होते हैं।

भीड़-भाड़ वाली जिंदगी से दूर जाकर सतधारा फाल्स में लीजिए शांति का अनुभव

अगर आप डलहौजी के पास घूमने की अच्छी जगह तलाश रहे हैं तो सतधारा फाल्स आपके लिए एक अच्छी जगह है। इसे स्थानीय भाषा में 'गंडक' के नाम से जाना जाता है। यहां का पानी साफ क्रिस्टल और निर्मल है। राजसी सतधारा झरने का पानी की बूंदे जब चट्टानों पर टकराकर उछलती हैं तो पर्यटकों को बेहद आनंदित करती हैं। यहां पानी से गीली हुई मिट्टी की खुशबू हवा को ताजा कर देती है। सतधारा जलप्रपात को चारों ओर का दृश्य अपनी भव्यता के साथ दर्शकों को बेहद प्रभावित करता है। अगर आप सतधारा फाल्स घूमने के अलावा इसके पर्यटन स्थलों की सैर भी करना चाहते हैं तो इस आर्टिकल को पूरा जरूर पढ़ें, इसमें हमने सतधारा फाल्स जाने के बारे में और इसके पास के पर्यटन स्थलों के बारे में पूरी जानकारी दी है।

सतधारा जलप्रपात की मुख्य विशेषताएं

सतधारा जलप्रपात का अपना अलग औषधीय मूल्य है। स्प्रिंग्स में तत्व माइका तत्व पाया जाता है, जिसमें ऐसे औषधीय गुण होते हैं, जो संभावित रूप से कई बीमारियों का इलाज कर सकता है। यह चकाचौंध वाला झरने पंचपुला के रास्ते में स्थित हैं, जो डलहौजी में घूमने के लिए एक और बहुत ही लोकप्रिय जगह है। सतधारा झरने से सूर्यास्त का दृश्य बस शानदार दिखाई देता है, पर्यटकों को देखने में ऐसा लगता है कि एक पीली आग की नारंगी गेंद घूमती है और धीरे-धीरे पहाड़ियों के पीछे छुप जाती है।

सतधारा फाल्स घूमने के लिए टिप्स

- जब आप झरने के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं और इसमें चारों ओर छींटे आपके कपड़ों को गीला कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त कपड़ें ले जाना न भूलें।
- फॉल्स से सूर्यास्त देखने के लिए वहां उपस्थित रहने की कोशिश करें।
- ऐसे जूते पहनें जो आपको अच्छी पकड़ और आराम दें, क्योंकि चट्टानों में काई से फिसलन होती है।
- अपने साथ कैमरा ले जाना न भूलें।

सतधारा फाल्स के आसपास के प्रमुख पर्यटन और आकर्षण स्थल

सतधारा फाल्स डलहौजी का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अगर आप इस फाल्स के अलावा डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों की सैर करना चाहते हैं तो यहां दी गई जानकारी को जरूर पढ़ें।

बकरोटा हिल्स

बकरोटा हिल्स जिसे अपर बकरोटा के नाम से भी जाना जाता है, यह डलहौजी का सबसे ऊंचा इलाका है और यह बकरोटा वॉक नाम की एक सड़क का सर्किल है, जो खजियार की ओर जाती है। भले ही इस जगह पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ नहीं है, लेकिन यहां टहलना और चारों तरफ के आकर्षक दृश्यों को देखना पर्यटकों की आंखों को बेहद आनंद देता है। आपको बता दें कि यह क्षेत्र चारों तरफ से देवदार के पेड़ों और हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

सच पास

सच दर्रा पीर पंजाल पर्वत शृंखला के ऊपर 4500 मीटर की ऊंचाई से होकर जाता है और डलहौजी को चंबा और पांगी घाटियों से जोड़ता है। आपको बता दें कि डलहौजी से 150 किमी की दूरी पर यह मार्ग उत्तर भारत में पार करने के लिए सबसे कठिन मार्गों में से एक है, जो लोग एडवेंचर पसंद करते हैं तो अक्सर सच पास (जब यह खुला होता है) का दौरा करते हैं और यहां से बाइक या कार चलाने का रोमांचक अनुभव लेते हैं। अगर आप इस मार्ग से यात्रा करें तो जोखिम न लें और अपने साथ एक अनुभवी ड्राइवर लेकर जाएं। यह चंबा या पांगी घाटी तक पहुंचने के लिए लोगों का पसंदीदा रास्ता है और डलहौजी से ट्रेकिंग के लिए एक प्रसिद्ध बिंदु है।

सुभाष बावली

सुभाष बावली डलहौजी में गांधी चौक से 1 किमी दूर स्थित एक ऐसी जगह है, जिसका नाम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस के नाम पर रखा गया। सुभाष बावली एक ओर अपने खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों, दूर-दूर तक फैले बर्फ के पहाड़ों दृश्यों और सुंदरता के लिए जाना जाता है। सुभाष बावली वो जगह है, जहां पर सुभाष चंद्र बोस 1937 में स्वास्थ्य की खराबी के चलते आए थे और वो इस जगह पर 7 महीने तक रहे थे। इस जगह पर रहकर वे बिलकुल ठीक हो गए थे। आपको बता दें कि यहां पर एक खूबसूरत झरना भी है, जो हिमनदी धारा में बहता है।

डैनकुंड पीक

डैनकुंड पीक जिसे सिंगिंग हिल के नाम से भी जाना जाता है, जो डलहौजी में समुद्र तल से 2755 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। आपको बता दें कि यह डलहौजी में सबसे ऊंचा स्थान होने के कारण यहां से घाटियों और पहाड़ों के अद्भुत दृश्यों को देखा जा सकता है। प्रकृति प्रेमियों के लिए शांत जगह स्वर्ग के सामान है। डलहौजी क्षेत्र में स्थित डैनकुंड सचमुच देखने लायक जगह है, जो अपनी खूबसूरत बर्फ से ढकी चोटियों और हरे-भरे वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। डैनकुंड पीक हर साल भारी संख्या में देश भर से पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है।

गंजी पहाड़ी

गंजी पहाड़ी पठानकोट रोड पर डलहौजी शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक सुंदर पहाड़ी है। इस पहाड़ का नाम गंजी पहाड़ी इसकी खास विशेषता से लिया गया था, क्योंकि इस पहाड़ी पर वनस्पतियों की पूर्ण अनुपस्थिति है। गंजी का मतलब होता है गंजापन। डलहौजी के पास स्थित होने की वजह से यह पहाड़ी एक पसंदीदा पिकनिक स्थल है। सर्दियों के दौरान यह इलाका मोटी बर्फ से ढक जाता है, जो मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है।

चामुंडा देवी मंदिर

चामुंडा देवी मंदिर देवी काली को समर्पित एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यहां पर देवी अंबिका ने मुंडा और चंदा नाम के राक्षसों का वध किया था। इस मंदिर में देवी को एक लाल कपड़े में लपेटकर रखा जाता है, यहां आने वाले पर्यटकों को देवी की मूर्ति को छूने नहीं दिया जाता। इस क्षेत्र में पर्यटकों को कई सुंदर दृश्य भी देखने को मिलते हैं।

रॉक गार्डन

रॉक गार्डन डलहौजी में एक सुंदर उद्यान और एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है। इस पार्क में पर्यटक आराम करने के अलावा, इस क्षेत्र में उपलब्ध कई साहसिक खेलों का भी मजा ले सकते हैं, जिनमें जिप लाइनिंग आदि शामिल हैं।

खाज्जिअर

खाज्जिअर डलहौजी के पास स्थित एक छोटा सा शहर है जिसको 'मिनी स्विट्जरलैंड' या 'भारत का स्विटजरलैंड' के नाम से भी जाना जाता है। इस स्थान की खूबसूरती हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। 6,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित खाज्जिअर अपनी प्राकृतिक सुंदरता की वजह से डलहौजी के पास घूमने की सबसे अच्छी जगहों में से एक हैं। इस जगह होने वाले साहसिक खेल जोरबिंग, ट्रेकिंग पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

पंचपुला

पंचपुला हरे देवदार के पेड़ों के आवरण से घिरा एक झरना है, जो डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। पंचपुला वो जगह है, जहां पर पांच धाराएं एक साथ आती हैं। पंचपुला की मुख्य धारा डलहौजी के आसपास विभिन्न जगहों में पानी की पूर्ति करती है। यह जगह ट्रेकिंग और खूबसूरत दृश्यों की वजह से जानी जाती है। पंचपुला के पास एक महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह (शहीद भगत सिंह के चाचा) की याद में एक समाधि बनाई गई है, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली थी। मानसून के मौसम में इस जगह के प्राचीन पानी का सबसे अच्छा आनंद लिया जाता है, जब पानी गिरता तो यहां का वातावरण पर्यटकों को आनंदित करता है।

डलहौजी जाने के लिए यह है सबसे अच्छा समय

डलहौजी अपनी आदर्श जलवायु की वजह से एक ऐसी जगह है, जहां आप पूरे वर्ष भर घूम सकते हैं। हालांकि, डलहौजी जाने का सबसे अच्छा समय मार्च-जून के बीच का होता है। मार्च और अप्रैल के महीनों में यहां पर बर्फ पिघलना शुरू हो जाती है और जब सूरज की किरणें बर्फ से ढके पहाड़ों और चरागाहों से टकराती है, तब इस जगह की चमक देखने लायक होती है। इस समय यहां का मौसम बहुत सुहावना रहता है आप मार्च और अप्रैल में ठंड का अनुभव कर सकते हैं और जून के महीने में यहां का तापमान थोड़ा बढ़ने लगता है। गर्मियों के महीनों में भी डलहौजी का मौसम काफी अच्छा होता है, जिसकी वजह से यह प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग के सामान है। मानसून भी यहां का मौसम सुहावना है, क्योंकि मध्यम वर्षा से आपकी योजनाओं में कोई रुकावट नहीं आती। डलहौजी में सर्दियां साहसिक गतिविधियों के लिए सही हैं।

हवाई जहाज से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: हवाई जहाज से डलहौजी पहुंचने कांगड़ा में गग्गल हवाई अड्डा इसका सबसे निकटतम घरेलू हवाई अड्डा है। यह हवाई अड्डा शहर से 13 किमी दूर है और यहां से डलहौजी हिल स्टेशन तक पहुंचने के लिए टैक्सी आसानी से उपलब्ध हैं। इसके अलावा आप अन्य हवाई अड्डे चंडीगढ़ (255 किमी), अमृतसर (208 किमी) और जम्मू (200 किमी) के लिए भी उड़ान ले सकते हैं।

रेलगाड़ी से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: डलहौजी का सबसे निकटतम रेल स्टेशन पठानकोट है, जो इस पहाड़ी शहर से 80 किमी दूर स्थित है और भारत के विभिन्न शहरों, जैसे दिल्ली, मुंबई और अमृतसर से कई ट्रेनों के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। पठानकोट रेलवे स्टेशन से डलहौजी पहुंचने के लिए आपको बाहर से टैक्सियां मिल जाएंगी।

सड़क मार्ग से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: डलहौजी सड़क मार्ग की मदद से आसपास के प्रमुख शहरों और जगहों से जुड़ा हुआ है। राज्य बस सेवा और लक्जरी कोच डलहौजी को आसपास की सभी प्रमुख जगहों और शहरों से जोड़ते हैं। दिल्ली से डलहौजी के लिए रात भर लक्जरी बसें भी उपलब्ध हैं। इस मार्ग पर टैक्सी और निजी वाहन भी मिल जाते हैं।

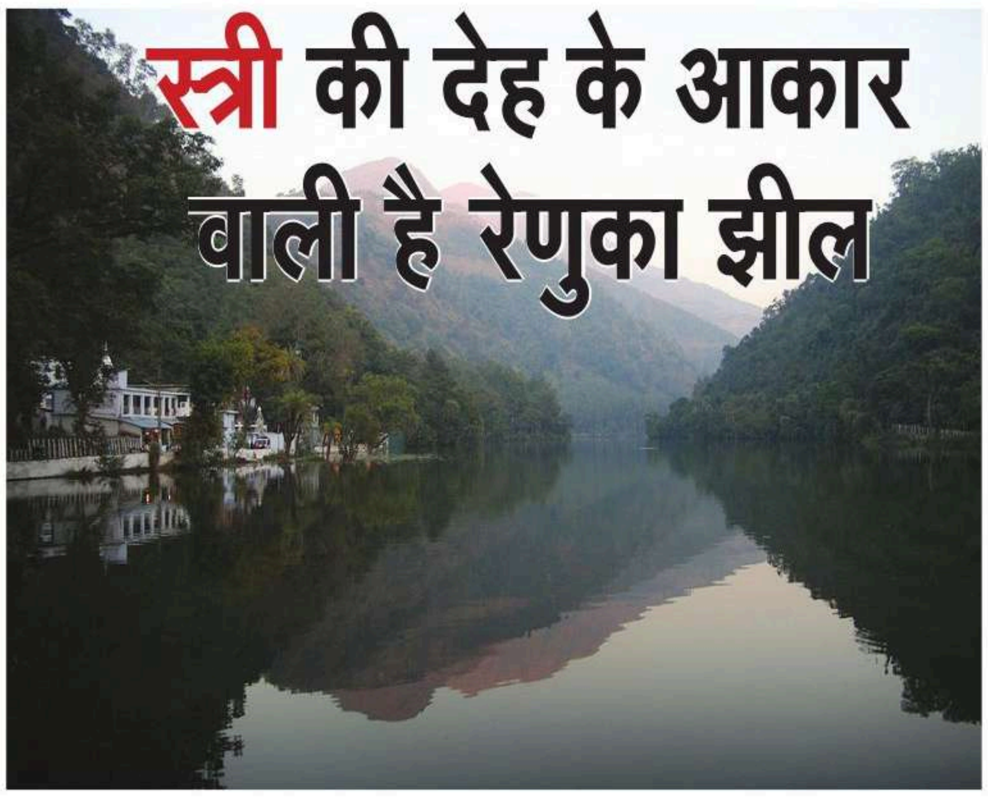

स्त्री की देह के आकार वाली है रेणुका झील

रेणुका झील हिमाचल प्रदेश के नाहन से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रेणुका झील की समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 2200 फीट है। यह एक अत्यंत रमणीक झील है, जो लगभग तीन किलोमीटर लंबी तथा आधा किलोमीटर चौड़ी एक अदभुत झील है। इस झील का आकार एक लेटी हुई स्त्री की देह के समान है। जो इसे अदभुत एवं अनोखा बनाता है।

इस झील के चारों ओर हरियाली एवं इसके पानी मे अठखेलियां करती मछलियां पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इस झील की गणना एक पावन तीर्थ स्थल के रूप में भी की जाती है। हर वर्ष दिपावली के लगभग दस दिन बाद यहां एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। झील के किनारे मां रेणुका और परशुराम का प्रसिद्ध मंदिर है तथा एक छोटा सा चिडियाघर है, जो पर्यटकों को काफी पसंद आता है। झील में मनोरंजन के लिए बोटिंग करने की सुविधा उपलब्ध है, जिसमें बैठकर सैलानी झील के चारों ओर की प्राकृतिक सुंदरता के दर्शन कर सकते हैं, रेणुका झील का स्त्री रूपी आकार देखने के लिए यहा से आठ किलोमीटर ऊपर जामु चोटी पर जाना पड़ता है। जहां से रेणुका झील का आकार लेटी हुई स्त्री की देह के समान दिखाई पड़ता है।

रेणुका झील का इतिहास

रेणुका झील कैसे बनी और इसकी धार्मिक महत्व के पीछे कई मशहूर दंत कथाए प्रचलित हैं। एक कहानी के अनुसार कहा जाता है कि बहुत समय पहले यहां राजा रेणु रहा करते थे। उनकी दो सुंदर पुत्रियां थीं, जिनमें से एक नैनुका तथा दूसरी पुत्री रेणुका थी। एक बार राजा ने दोनो पुत्रियों से प्रश्न किया कि वो किसका दिया खाती हैं, जिसके जवाब में नैनुका ने कहा कि वह अपने पिता का दिया खाती है। जबकि रेणुका ने जवाब दिया कि वह भगवान का दिया और अपने नसीब का खाती हूं। रेणुका के जवाब से राजा अप्रसन्न हो गए और उन्होंने रेणुका को सबक सिखाने का निर्णय लिया। कुछ समय बाद राजा ने बड़ी पुत्री नैनुका का विवाह बड़ी धूम-धाम से एक पराक्रमी राजा सहस्त्रबाहु से कर दिया और छोटी पुत्री रेणुका को सबक सिखाने रेणुका का विवाह एक सीधे साधे तपस्वी ऋषि जमदग्नि से कर दिया। हालांकि रेणुका राजसी ठाठ-बाट मे पली बढ़ी थी। फिर भी उसने ऋषि जमदग्नि को अपना पति स्वीकार किया और तन मन से उसकी सेवा करने लगी। एक दिन राजा सहस्त्रबाहु की दृष्टि रेणुका पर पड़ी तो वह उसे देखता ही रह गया। वास्तव में रेणुका का रूप लावण्य उसके ह्रदय में उतर गया था। उसने उसी समय रेणुका को अपनी रानी बनाने का फैसला किया और रेणुका को पाने की युक्ति सोचने लगा। अपने षड्यंत्र के तहत एक दिन वह चुपचाप ऋषि जमदग्नि के आश्रम पहुंचा और ध्यानमग्न जमदग्नि को उसने अपने बाण से मार डाला। उसके बाद वह रेणुका का चीरहरण करने उसकी तरफ बढ़ा। रेणुका सहस्त्रबाहु के अपवित्र इरादों को भांप गई और भागकर नीचे तलहटी मे जा पहुंची। सहस्त्रबाहु रेणुका का पीछा करता हुआ, उसके पीछे दौड़ा। इससे पहले वह रेणुका को पकड़ पाता। एकाएक धरती फटी और देखते ही देखते रेणुका उसमें समा गई। रेणुका के धरा में समाते ही पानी की धाराएं फूट पड़ी और देखते ही देखते उस स्थान ने एक झील का रूप धारण कर लिया। तभी से यह झील रेणुका झील के नाम से प्रसिद्ध हो गई।

रेणुका झील कैसे पहुंचें

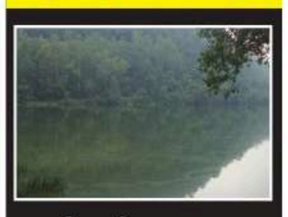

हवाई मार्ग

मुब्बार हटटी यहां का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है, जो यहां से 40 किमी की दूरी पर स्थित है। यहां से टैक्सी द्वारा जाया जा सकता है।

रेल मार्ग

यहां का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन कालका है, जो लगभग 110 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां से आप बस या टैक्सी के द्वारा जा सकते हैं।

सड़क मार्ग

यह स्थल सड़क मार्ग से जुड़ा है।

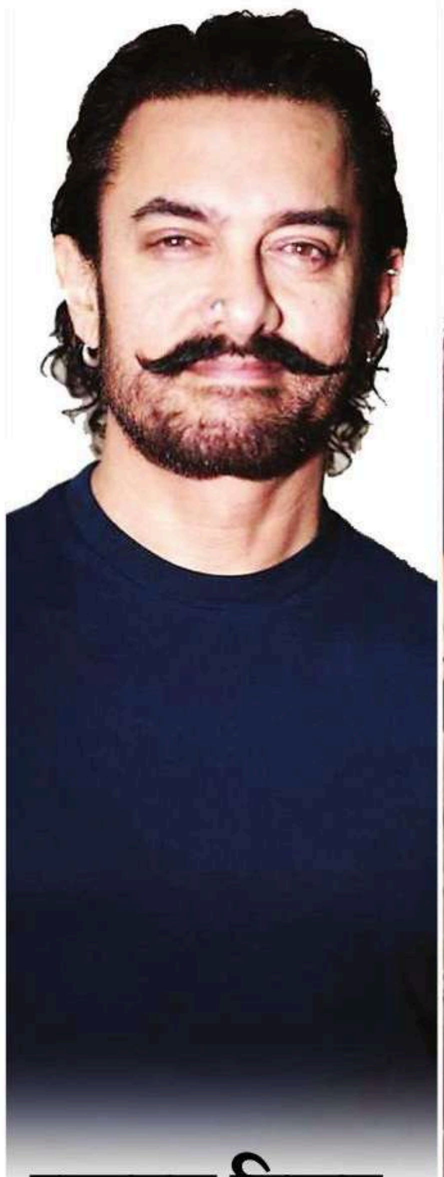

उज्जवल निकम की बायोपिक से आमिर खान ने पीछे खींचे हाथ

बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में हैं। हालांकि, हाल ही में अभिनेता अपने फिल्मी करियर को लेकर सुर्खियों में हैं। इससे पहले खबर आई थी कि अभिनेता उज्ज्वल निकम की बायोपिक में काम कर सकते हैं। हालांकि, ताजा रिपोर्ट्स से पता चला है कि अभिनेता शायद इस फिल्म का हिस्सा नहीं होंगे।

फिल्म से आमिर की छुट्टी

अभिनेता ने कथित तौर पर शेड्यूल टकराव के कारण महीनों तक बातचीत करने के बाद प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। हालांकि, यह प्रोजेक्ट अभी भी जारी है। फिल्मफेयर ने एक सूत्र के हवाले से बताया, आमिर उज्ज्वल निकम की बायोपिक में उनका किरदार निभाने के लिए विचार कर रहे थे, लेकिन लंबे समय तक चर्चा और इंतजार के बाद उन्होंने निर्माता दिनेश विजन को मना कर दिया। ऐसा नहीं है कि आमिर को यह प्रोजेक्ट या आइडिया पसंद नहीं आया।

क्यों फिल्म नहीं करेंगे आमिर

रिपोर्ट में आगे दावा किया गया कि बात यह थी कि इस तरह के मूल्यवान और गंभीर काम के लिए समय निकाला जा सके। आमिर और उनके परिवार के पास इस प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए जरूरी समय नहीं था। मैडॉक फिल्म्स इस प्रोजेक्ट का निर्माण कर रहा है। अब प्रोडक्शन हाउस ने नए प्रमुख अभिनेता की तलाश शुरू कर दी है।

कौन हैं उज्ज्वल निकम

रिपोर्ट्स के अनुसार, आमिर खान को 2023 में एक प्रोजेक्ट के लिए संपर्क किया गया था, जहां वह उज्ज्वल निकम से प्रेरित एक हाई-प्रोफाइल वकील की भूमिका निभाने वाले थे। बता दें कि उज्ज्वल निकम एक हाई-प्रोफाइल वकील रहे हैं और उन्होंने कुछ ऐतिहासिक मामलों पर काम किया है, जिनमें गुलशन कुमार हत्या मामला और 1993 बॉम्बे ब्लास्ट मामला शामिल हैं।

सलमान खान की इस सलाह ने बदल दी जैस्मिन भसीन की जिंदगी

रियलटी शो बिग बॉस से मशहूर होने वाली टीवी अभिनेत्री जैस्मिन भसीन इस शो को अपने करियर के लिए एक अहम पड़ाव मानती हैं। इसी शो में जैस्मिन को उनका प्यार मिला था, जब अली गोनी ने उनके लिए अपने प्यार का सार्वजनिक इजहार किया था। अब अभिनेत्री ने इस शो के दौरान मिली एक ऐसी सलाह का जिक्र किया, जिसने उनकी जिंदगी पर गहरा प्रभाव डाला। ये सलाह उन्हें किसी और ने नहीं बल्कि शो के होस्ट और बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान ने दी थी।

सलमान की सलाह ने डाला जीवन पर गहरा प्रभाव

बॉलीवुड बबल के साथ बातचीत के दौरान जैस्मिन भसीन ने शो के दौरान के अपने खूबसूरत पलों को याद करते हुए सलमान खान द्वारा उन्हें दी गई एक सलाह का भी जिक्र किया। जिसने उनके जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। अभिनेत्री ने बताया कि कैसे सलमान के कुछ शब्दों ने उन्हें भावनात्मक रूप से अधिक खुला और आत्मविश्वासी बनने में मदद की। उसका उनके जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा। जैस्मिन ने बताया कि सलमान खान ने मुझसे कहा था, जैस्मिन, तुम जितना सोचती हो, जो महसूस करती हो, तुम उसे जाहिर नहीं करती हो। बोलोगी तो नहीं पछताओगी। अगर नहीं बोलोगी, मन में रखोगी तो पछताओगी। अब मैं ज्यादा एक्सप्रेसिव हो गई हूं जैस्मिन ने आगे कहा, सलमान खान ने एक एपिसोड के दौरान मुझे यह सलाह दी थी। मैंने इसे गंभीरता से लिया है और मेरा विश्वास करो, मैं बेहतर महसूस करती हूं। मैं पहले से ज्यादा एक्सप्रेसिव हो गई हूं। चाहे वह अच्छी बात हो या

बुरी। पहले मैं सिर्फ अच्छा ही बोलती थी और अगर किसी को कुछ बुरा लगता था तो मैं नहीं बोलती थी। पर अब मैं अपने आप को ज्यादा एक्सप्रेस करती हूं और मैं उनकी इस सलाह के लिए बहुत आभारी हूं।

बिग बॉस 14 से पॉपुलर हुई जैस्मिन

बिग बॉस 14 के बाद जैस्मिन भसीन काफी लोकप्रिय हो गईं। वो सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहने लगीं। इसी शो के दौरान जैस्मिन भसीन और अली गोनी का अफेयर खुलकर सामने आया था। दोनों अभी भी रिश्ते में हैं और दोनों की शादी की खबरें अक्सर चर्चाओं में बनी रहती हैं। हालांकि, अभी तक इस बारे में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

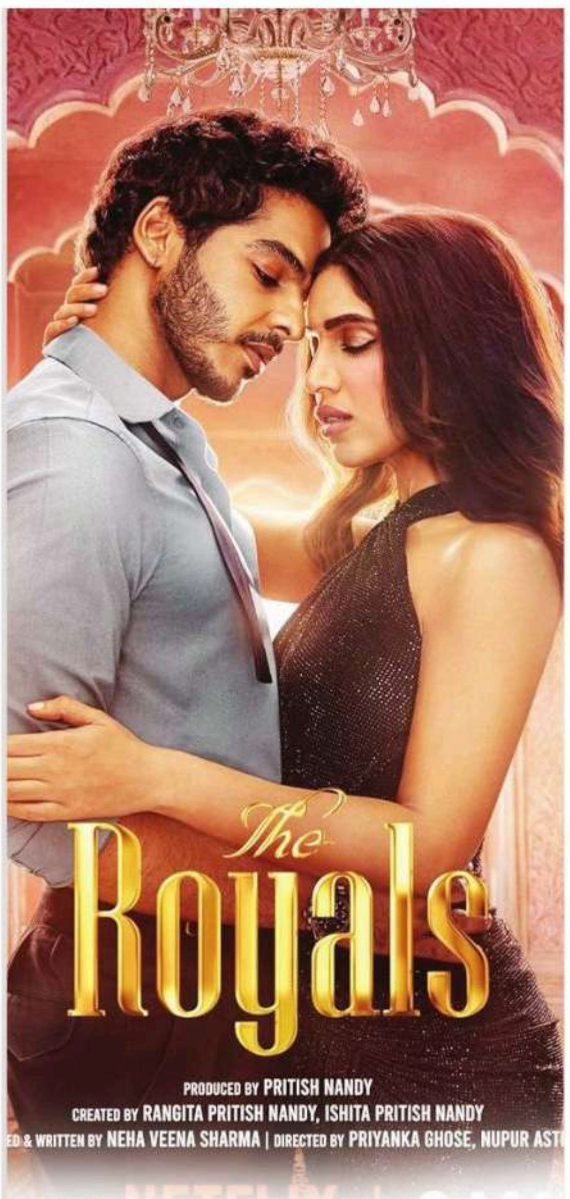

जिद्दी राजकुमार की आमकुमारी से मुलाकात की शाही प्रेम कहानी है द रॉयल्स

ईशान खट्टर और भूमि पेडनेकर की वेब सीरीज द रॉयल्स को अब देखने के लिए और ज्यादा इंतजार नहीं करना होगा, क्योंकि फिल्म निर्माताओं ने इसकी ओटीटी रिलीज से पर्दा उठा दिया है।

भूमि पेडनेकर और ईशान खट्टर पहली बार किसी वेब सीरीज में रोमांस करते नजर आएंगे। यह पहली बार है जब दोनों की जोड़ी एक साथ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एक साथ नजर आएगी। वेब सीरीज द रॉयल्स की आज ओटीटी रिलीज की घोषणा हो गई है, जिससे वेब सीरीज को लेकर प्रशंसकों की उत्सुकता और अधिक बढ़ गई है। यह फिल्म एक रोमांटिक कॉमेडी वेब सीरीज है, जो खस्ताहाल मोरपुर पैलेस पर आधारित है, जहां आर्थिक रूप से संघर्षरत शाही परिवार का सामना एक दृढ़ निश्चयी सीईओ, सोफिया शेखर से होता है। नेटफ्लिक्स ने आज अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक नए पोस्टर के साथ द रॉयल्स की ओटीटी रिलीज डेट की जानकारी शेयर की है, जिससे प्रशंसक बेहद खुश हैं। नेटफ्लिक्स ने ईशान और भूमि की एक रोमांटिक तस्वीर शेयर की है, जिसमें दोनों एक-दूजे को गले लगाते नजर आ रहे हैं। इस शानदार तस्वीर के साथ कैप्शन में लिखा, जिद्दी राजकुमार की मुलाकात गर्लबॉस आमकुमारी से होती है। रॉयल मेस, या शाही प्रेम कहानी? 9 मई को नेटफ्लिक्स पर आने वाली नई सीरीज द रॉयल्स देखें, सिर्फ नेटफ्लिक्स पर।

द रॉयल्स एक शाही रोमांटिक कॉमेडी है, जिसमें एक ट्विस्ट है। यह शाही परिवार खिताबों से भरा हुआ है लेकिन खजाने से कंगाल है। जब कॉरपोरेट जगत की एक तेज-तर्रार सीईओ सोफिया शेखर उनके जीवन में एंट्री करती है, तो महल की किस्मत को ठीक करना उसका मिशन बन जाता है। लेकिन मोरपुर के लाड़ले राजकुमार अविराज सिंह एक कहानी में एक नया मोड़ लेकर आते हैं। द रॉयल्स की नेटफ्लिक्स पर 9 मई से स्ट्रीमिंग शुरू होगी। इसमें ईशान और भूमि के अलावा जीनत अमान, साक्षी तंवर,नोरा फतेही, डिनो मोरिया, मिलिंद सोमन, चंकी पांडे,विहान सामत, सुमुखी सुरेश, उदित अरोड़ा, लिसा मिश्रा और ल्यूक केनी जैसे कलाकार नजर आएंगे। वेब सीरीज का निर्देशन प्रियंका घोष और नुपुर अस्थाना ने किया है। इसका लेखन नेहा वीना और निर्माण प्रीतीश नंदी ने किया है।

निकिता दत्ता ने बताया असल जिंदगी में कैसे हैं जयदीप अहलावत

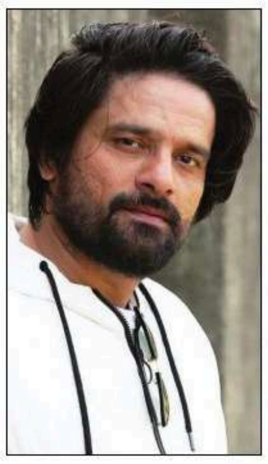

जयदीप अहलावत इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'ज्वेल थीफ- द हीस्ट बिगिन्स' को लेकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। जयदीप अहलावत अपने इंटेंस रोल और शानदार अभिनय के लिए जाने जाते हैं। वो अक्सर पर्दे पर गंभीर भूमिकाओं में ही दिखाई देते हैं। लेकिन क्या जयदीप अहलावत असल जिंदगी में भी अपने किरदारों के जितना ही गंभीर हैं ? इस बारे में बात की है 'ज्वेल थीफ' में जयदीप अहलावत की को-स्टार निकिता दत्ता ने। बातचीत में निकिता दत्ता ने जयदीप अहलावत के ऑफ स्क्रीन व्यक्तित्व के बारे में बात करते हुए कहा, ऑफ कैमरा जयदीप अहलावत इतने गंभीर नहीं हैं। वह वास्तव में एक फनी इंसान हैं। फिल्म के कुछ मुश्किल सीन के समय उन्होंने काफी मदद की और उनसे काफी कुछ सीखने को मिला। फिल्म में एक सीन था जिसमें मैं सिगरेट पकड़े हुए हूं और एक नॉन-स्मोकर होने के नाते मुझे उस सीन में चुनौती का सामना करना पड़ रहा था। मैं इस बात को लेकर सतर्क हो रही थी कि इसे कैसे पकड़ना है, कहां धूम्रपान करना है, कैमरे पर यह कैसा दिखेगा और भी बहुत कुछ। तभी जयदीप अहलावत आराम से आए और उन्होंने सुझाव दिया, जिसे मानना काफी आसान था। यह वाकई में हैरान करने वाला था। वह चुपचाप आते हैं और विनम्रता और सहजता से सुझाव देते हैं।

25 अप्रैल से स्ट्रीम होगी 'ज्वेल थीफ'

'ज्वेल थीफ' में जयदीप अहलावत औलक के किरदार में हैं, जो अफ्रीका के सबसे कीमती हीरे, रेड सन को हासिल करने के लिए जुनूनी शक्तिशाली टाइकून है। सैफ अली खान एक रहस्यमय चोर की भूमिका निभा रहे हैं, जिसे औलक ने हीरे को चुराने में मदद करने के लिए काम पर रखा है। वहीं कुणाल कपूर एक पुलिस वाले की भूमिका में और निकिता दत्ता फिल्म की फीमेल लीड के रूप में नजर आएंगी। कुकी गुलाटी और रॉबी ग्रेवाल द्वारा निर्देशित 'ज्वेल थीफ - द हीस्ट बिगिन्स' 25 अप्रैल से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी।

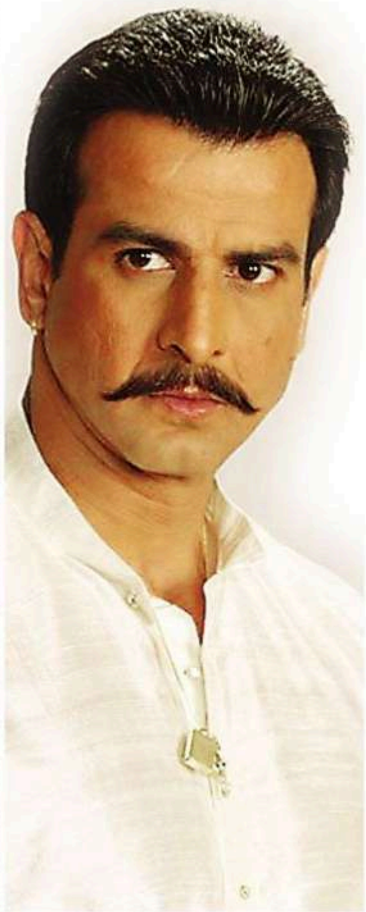

'चक्रवर्ती सम्राट पृथ्वीराज चौहान' में नजर आएंगे रोनित

रोनित रॉय जल्द ही सीरियल 'चक्रवर्ती सम्राट पृथ्वीराज चौहान' में राजा सोमेश्वर चौहान की भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे। कुछ दिन पहले ही अपने इंस्टाग्राम पेज पर अभिनेता से इस सीरियल से जुड़ा एक प्रोमो साझा किया। रोनित रॉय पहले भी कई मशहूर टीवी सीरियल का हिस्सा रहे हैं, जानिए उन्हीं कुछ चर्चित टीवी सीरियल के बारे में।

कसौटी जिंदगी की

साल 2001 में सीरियल 'कसौटी जिंदगी की' में श्वेता तिवारी ने प्रेरणा नाम की लड़की का रोल किया था, रोनित रॉय भी इस सीरियल में नजर आए। रोनित ने मिस्टर बजाज का किरदार निभाया। मिस्टर बजाज, प्रेरणा से बेइंतहा मोहब्बत करता था। दर्शकों को भी रोनित का यह किरदार काफी पसंद आया।

क्योंकि सास भी कभी बहू थी

टीवी का सबसे चर्चित टीवी सीरियल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी(2000)' में भी रोनित रॉय ने मिहिर का किरदार निभाया। पहले इस किरदार को अमर उपाध्याय ने निभाया था। सीरियल में तुलसी (स्मृति ईरानी) नाम की महिला और उसके गुजराती ससुराल की कहानी थी। रोनित ने तुलसी के पति मिहिर का रोल इस टीवी सीरियल में किया।

अदालत

साल 2010 में रोनित रॉय ने एक कोर्टरूम ड्रामा सीरियल 'अदालत' किया। इसमें उन्होंने वकील के.डी पाठक का किरदार किया। सीरियल में रोनित के किरदार को दर्शकों ने काफी सराहा, यह सीरियल सास-बहू ड्रामा से बिल्कुल अलग था।

बंदिनी

साल 2009 में रोनित रॉय ने एक सीरियल 'बंदिनी' किया। इसमें अभिनेता ने धर्मराज शक्ति सिंह का किरदार निभाया, जिसकी शादी अपने से आधी उम्र की लड़की से हो जाती है। जिस जोड़े में एज गैप होता है, उनके बीच प्यार की कहानी कैसे बनती है? यही सीरियल की कहानी थी। सीरियल में हीरोइन का रोल आसिया काजी ने निभाया था।

इतना करो ना मुझे प्यार

2014 में सीरियल 'इतना करो ना मुझे प्यार' में रोनित रॉय और पल्लवी कुलकर्णी साथ नजर आए। इस सीरियल में नील और रागिनी की कहानी थी, जो किसी कारण से अलग हो गए, इनके बीच तलाक हो गया। सालों बाद ये मिलते हैं, तो इनके बीच फिर से एक प्रेम कहानी शुरू होती है।

विजय वर्मा और फातिमा सना शेख की उल जलूल इश्क को मिला नया शीर्षक

विजय वर्मा और फातिमा सना शेख की आने वाली फिल्म उल जलूल इश्क का नाम बदल दिया गया है। फैशन आइकन मनीष मल्होत्रा द्वारा निर्मित इस रोमांटिक ड्रामा का नाम अब आधिकारिक तौर पर गुस्ताख इश्क रखा गया है। यह अपडेट खुद मल्होत्रा ने इंस्टाग्राम पर शेयर किया। उन्होंने एक नया पोस्टर भी जारी किया, जिसमें विजय और फातिमा एक दूसरे को गले लगाते हुए दिखाई दे रही है। इस फिल्म का निर्देशन विभु पुरी करेंगे, जो 2015 में आई फिल्म हवाईजादा के लिए जाने जाते हैं।

जनवरी में मनीष मल्होत्रा ने भी स्टार-स्टडेड कास्ट को प्रशंसकों से मिलवाया था। बन टिक्की और ट्रेन फॉम छपरौला के बाद यह मल्होत्रा का स्टेज 5 प्रोडक्शन के बैनर तले तीसरा प्रोजेक्ट है।

फिल्म का निर्माण और कलाकार फिल्म के अनाउंसमेंट के दौरान मनीष ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट भी शेयर किया था, जिसमें लिखा था, बेवकूफियां, नादान गलतियां, बड़ी भूल है इश्क, सच पूछिए तो मेरे हुजूर उल जलूल है इश्क। मुझे हमारे स्टेज 5 प्रोडक्शन के तीसरे फिल्म प्रोडक्शन की घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है। विभु पुरी द्वारा लिखित और निर्देशित एक खूबसूरत फिल्म उल जलूल इश्क फिल्म की शूटिंग 9 जनवरी से इन बेहद प्रतिभाशाली कलाकारों नसीरुद्दीन शाह, विजय वर्मा, फातिमा सना शेख के साथ शुरू होगी।

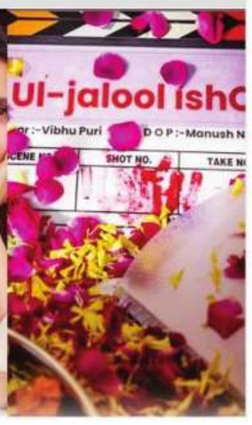

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक सम्पादक कृष्णा टेकड़ीवाल द्वारा डिजिटल अखबार कंकड़बाग पटना से प्रकाशित। समाचार पत्र में किसी भी समाचार व लेख-आलेख पर सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्याय क्षेत्र पटना ही रहेगा। मोबाइल- 9801716267